पर्यावरण
5100 बालिकाओं ने निकाली वृक्ष काँवड़ यात्रा 3

देसंविवि का गौरव
'नालंदा विवि. के लिए एजेंडा और दृष्टिकोण' सम्मेलन में भागीदारी 7

ऐतिहासिक सम्मेलन
राष्ट्र के जागरण का समय आ गया 8

शताब्दी वर्ष-2026

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 सितम्बर 2025

वर्ष : 38, अंक : 06
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 सितम्बर 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

युग निर्माण सत्संकल्प-10

मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी, उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।

हम प्रशंसा और निंदा करने में, सम्मान और तिरस्कार करने में थोड़ी सावधानी बरतें, तो लोगों को कुमार्ग पर न चलने और सत्पथ अपनाने में बहुत हद तक प्रेरणा दे सकते हैं। आमतौर से उनकी प्रशंसा की जाती है, जिन्होंने सफलता, योग्यता, संपदा एवं विभूतियाँ एकत्रित कर ली हैं। चमत्कार को नमस्कार किया जाता है, यह तरीका गलत है।

लाठी एवं चाकू स्वयं न तो प्रशंसनीय हैं, न निंदनीय। उनका प्रयोग पीड़ा पहुँचाने के लिए हुआ या प्राण-रक्षा के लिए, इसी आधार पर उनकी भर्त्सना या प्रशंसा की जा सकती है। मनुष्य की विभूतियाँ एवं योग्यताएँ भी ऐसे ही साधन हैं। वे यदि सद् हैं तो वह साधन भी सद् हैं, पर यदि वे असद् हैं तो वह साधन भी असद् कहे जाएँगे। उसी आधार पर सम्मान देने, प्राप्त करने की परंपरा बनाई जानी चाहिए।

धन के प्रति, धनी के प्रति आदर बुद्धि तभी रहनी चाहिए जब वह नीति और सदाचारपूर्वक कमाया गया हो। यदि अधर्म और अनीति से उपार्जित धन द्वारा धनी बने हुए व्यक्ति के प्रति हम आदर की दृष्टि रखते हैं तो इससे उस प्रकार के अपराध करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन ही मिलता है और इस दृष्टि से अपराध वृद्धि में हम स्वयं भी भागीदार बनते हैं ।

हमारी आदर बुद्धि यदि विवेकपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करे तो कितने ही कुमार्ग पर बढ़ते हुए कदम रुक सकते हैं और कितने ही सन्मार्ग की ओर चलते हुए झिझकने वाले पथिक प्रेरणा और प्रोत्साहन पाकर उस दिशा में तत्परतापूर्वक अग्रसर हो सकते हैं ।

जिन लोगों ने बाधाओं को सहते हुए भी अपने जीवन में कुछ आदर्श उपस्थित किए हैं, उनका सार्वजनिक सम्मान होना चाहिए, उनकी प्रशंसा मुक्तकंठ से की जानी चाहिए और जो लोग निंदनीय मार्गों द्वारा उन्नति कर रहे हैं, उनकी प्रशंसा एवं सहायता किसी भी रूप में नहीं करनी चाहिए।

अवांछनीय कार्यों में सम्मिलित होना भी एक प्रकार से उन्हें प्रोत्साहन देना ही है क्योंकि श्रेष्ठ पुरुषों की उपस्थिति मात्र से लोग कार्य में उनका समर्थन मान लेते हैं और फिर स्वयं भी उनका सहयोग करने लगते हैं। इस प्रकार अनुचित कार्यों में हमारा प्रत्यक्ष और परोक्ष समर्थन अंततः उन प्रवृत्तियों को बढ़ाने वाला ही सिद्ध होता है ।

बेईमानी से करोड़पति बना व्यक्ति भी हमारी दृष्टि में तिरस्कृत होना चाहिए और वह असफल और गरीब व्यक्ति, जिसने विपन्न परिस्थितियों में भी जीवन के उच्च आदर्शों की रक्षा की, उसे प्रशंसा, प्रतिष्ठा, सम्मान और सहयोग सभी कुछ प्रदान किया जाना चाहिए। जब तक जनता का निंदा-प्रशंसा का, आदर-तिरस्कार का मापदंड न बदलेगा, तब तक अपराधी मूँछों पर ताव देकर अपनी सफलता पर गर्व करते हुए दिन-दिन अधिक उच्छृंखल होते चलेंगे और सदाचारी खिन्न और निराश रहकर सत्पथ से विचलित होने लगेंगे। इसीलिए युग निर्माण सत्संकल्प में यह प्रबल प्रेरणा प्रस्तुत की गई है कि हम मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं एवं विभूतियों को नहीं सज्जनता और आदर्शवादिता को ही रखें।

प्रेम
के द्वारा सर्वांगीण कल्याण की साधना

आज का युग अपने-पराये के भाव को अधिक प्रोत्साहन दे रहा है। पारस्परिक प्रेम-भाव नष्ट हो रहा है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी और अपने परिवार की सुख-समृद्धि के लिए प्रयत्नशील है।

परायेपन के भाव से संसार में पागलपन और मानसिक चिन्तायें बढ़ती जा रही हैं। दुर्भावना और कलह का बोलबाला है। हत्याएँ और आत्महत्याएँ भी दिन पर दिन बढ़ रही हैं। यदि मनुष्य सर्वात्मभाव को अपना ले, सभी को अपना मानने लगे तो ऐसी घटनाओं में बहुत कुछ कमी हो सकती है।

इन बुराइयों को दूर करने के लिए प्रेम-पूर्ण वातावरण चाहिए। यदि आप अपने प्रति अथवा ईश्वर के प्रति प्रेम करते हैं, तो उसकी मात्रा में वृद्धि कीजिए और दूसरों के प्रति भी प्रेम करने का स्वभाव बनाइये। प्रेम का यह कार्य पहले अपने घर से ही आरंभ कीजिए। पत्नी, पुत्र, भाई, बहिन, माता, पिता आदि से प्रेम कीजिए। जब आप स्वयं विश्वास कर लें कि इनके प्रति प्रेम करने में सफल हो गये हैं, तब घर से बाहर निकल कर प्रेम की सरिता बहा दीजिए। आपका प्रेम दूसरों के प्रति जैसे-जैसे बढ़ेगा, वैसे-वैसे ही आपकी शक्ति सर्वत्र बढ़ती जाएगी। वैसे-वैसे ही आपसे अधिक से अधिक व्यक्ति प्रेम करने और मिलने लगेंगे।

यदि आप बुरे व्यक्ति पर भी दया और प्रेम प्रदर्शित करेंगे तो संभव है कि वह आपके प्रभाव से अपनी बुराइयों को धीरे-धीरे छोड़ दे।

जो लोग आपसे द्वेष करते हैं, उनके प्रति भी द्वेषभाव मत रखिये और सदा उनके कल्याण की कामना कीजिए। जो आपके निन्दक, पीड़क और शत्रु हैं, उनको भी बुरी दृष्टि से मत देखिये। एक लोकोक्ति भी है-''जो तोकू काँटे बोबे, बाकू बो तू फूल।'' जिस व्यक्ति में प्रेम के गुण का अभाव है, उसके प्रति प्रेम कीजिए। अपने आचरण से उसे प्रेम करना सिखाइये ।

बुद्ध, दयानन्द, शंकराचार्य, गाँधी आदि सबने जन-जन में जाकर अपना प्रेममय सन्देश दिया। वे सबसे प्रेम करते और लोगों के दुःख को अपना ही दुःख समझते थे। ईसा के अनुयायी एवं प्रचारक लोग विभिन्न कार्य करते हुए अपने मत का प्रचार करते थे। उन्होंने धर्म प्रचार के लिए अनेक छोटे काम करने में भी अपने को हीन नहीं माना। उन्होंने अपने लिए कभी किसी प्रकार के प्रत्युपकार की माँग नहीं की। उनका उद्देश्य केवल सेवा और प्रेम था। उनके विरोधी उनकी हिंसा में लगे थे, परन्तु उन्होंने प्रेम के बल पर ही अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त की थी।

सबकी मंगल कामना करो, इससे आपका भी मंगल होगा। उन लोगों के हित की बात सोचो, जिनके हित की बात कोई नहीं सोचता। जो लोग भयभीत, अपाहिज, वृद्ध, रोगी तथा पतित हैं, उनके भी कल्याण की कामना करो। जहाँ कहीं किसी के दुःख की बात सुनो, उसकी सहायता के लिए प्रयत्न करो। किसी की मृत्यु का समाचार सुनकर उसके प्रति संवेदना प्रकट करते हुए ईश्वर से उसकी सद्गति के लिए प्रार्थना कीजिए। ऐसी प्रार्थना बिना किसी को बताये भी की जा सकती है और यह आवश्यक नहीं कि मृत व्यक्ति अपना परिचित ही हो। आपके मन में सब प्राणियों के लिए कल्याणकारी भाव जाग्रत् होंगे ।

आप जब किसी व्यक्ति को अधिक बुरा पायें, तब इस बात पर विचार कीजिए कि क्या यह संभ्रांत नागरिक बन सकता है? तब आपका हृदय ही यह उत्तर देगा कि गुण-अवगुण के भाव सभी में होते हैं, परन्तु जिसका जो भाव जाग्रत् हो जाता है, उसी के अनुसार मनुष्य कार्य करने लगता है। तो क्यों न उसके मन में सद्गुणों को चैतन्य किया जाय? यदि उसके साथ प्रेम का व्यवहार किया जाए, तो वह अवश्य ही सुधर सकता है।

यदि आप सचमुच ही दूसरों की भलाई के लिए कटिबद्ध हैं तो आपको मानसिक और शारीरिक बल की उत्तरोत्तर प्राप्ति होती जायेगी। आपकी प्रार्थना में भी वह प्रभाव होगा कि जो कार्य शारीरिक श्रम से साध्य न हो, वह उससे सिद्ध हो जायेगा ।

सच्चा प्रेम एकांगी नहीं होता, वह सबके लिए हितकर होता है। संसार में उसकी विद्यमानता कल्याणकारिणी होती है। यदि हम कोई कार्य अपने लिए ही करते हैं तो उससे हमारी आत्मा संकुचित हो जाती है, परन्तु दूसरों के हित में किये गये कार्य हमारे विचारों को प्रशस्त करते हैं और उनके द्वारा हम अपने अभीष्ट पुण्य को प्राप्त करने में समर्थ होते हैं।

सबसे प्रेम करने वाले व्यक्ति के मन में अपने-पराये का भेद नहीं होता, क्योंकि वे संकीर्ण विचारों के क्षेत्र से ऊपर उठकर विशाल विश्व में पहुँचते हैं। विश्व भर के सब प्राणी उनके पारिवारिक सदस्य होते हैं। उनकी ऐसी भावना ही संसार में प्रेम के भावों को जाग्रत् करती है।

मनुष्य की वासनायें जितनी बढ़ती हैं, उनके अनुसार ही उसकी आवश्यकताएँ बढ़ती जाती हैं। ये आवश्यकताएँ ही मानव-प्रेम में भीषण बाधा के समान उपस्थित होती हैं। इसीलिए ज्ञानी जन सबसे पहले अपनी आवश्यकताओं में कमी करते हैं। मानसिक चिन्ताओं को भी कम करने का यही एक सरल मार्ग है। मानसिक चिन्ताओं की कमी, आवश्यकताओं की कमी और वासनाओं की कमी, इस दिशा में प्रयत्न करते-करते मनुष्य एक दिन विकार रहित हो जाता है और जब उसके विकार मिट जाते हैं, तभी वह सच्चा प्रेमी बनता है, इससे पूर्व कदापि नहीं बन सकता ।

जो मनुष्य अन्य मनुष्यों की, और विशेषकर मनुष्येतर प्राणियों की भी सेवा में लगा रहता है, उसे अपने दुःख दूर करने में आनन्द नहीं आता, बल्कि स्वयं दुःख पाकर भी वह दूसरों को सुखी करने में सुख मानता है। ऐसे मनुष्यों को स्वर्ग की भी कामना नहीं होती। बल्कि, सच मानिये उनके लिए तो पृथ्वी पर ही स्वर्ग है।

(अखण्ड ज्योति अगस्त, 1961 से संकलित, सम्पादित)

परिवार निर्माण का आदर्श प्रस्तुत कर हम जन्मशताब्दी वर्ष में दें एक सार्थक श्रद्धाञ्जलि

अपने जीवन से प्रस्तुत करें तप, त्याग, संयम और समाज सेवा का आदर्श

प्रज्ञा अभियान के विगत दो अंकों, 16 अगस्त 2025 और 1 सितम्बर 2025 के संपादकीय आलेखों में जन्मशताब्दी वर्ष के विशिष्ट अभियान के रूप में देव परिवारों के निर्माण की चर्चा की गई है। अखिल विश्व गायत्री परिवार की सक्रियता की धुरी और सतयुग की वापसी का आधार ये देव परिवार ही हैं। सतयुग क्या है? उत्कृष्ट चिंतन और श्रेष्ठ व्यक्तित्व सम्पन्न लोगों का समाज ही सतयुग है। ऐसे व्यक्तित्व देव परिवारों में ही ढलते हैं।

कलयुग में अनास्थावादी और अर्थप्रधान चिंतन को प्रमुखता मिली। मानवीय विचारधारा में स्वार्थ-संकीर्णता का बोलबाला रहा। अपने सुख के लिए नेकी, ईमानदारी और सामाजिक जिम्मेदारियों की बलि दी जाती रही। प्रगतिशीलता और स्वतंत्रता के नाम पर समाज में स्वच्छंदता बढ़ती गई, आत्मभाव घटता चला गया, परिणामस्वरूप परिवार व्यवस्था लड़खड़ाती और ध्वस्त होती चली गई। आरंभ में समाज को इस व्यवस्था ने बहुत आकर्षित किया, लेकिन अब मानवता इस जीवन शैली के भयंकर दुष्परिणाम अनुभव कर रही है। घर हैं, पर परिवार बिखर गए हैं; धन-साधन भरपूर हैं, पर सुख और संस्कार नहीं; व्यापार है, पर विश्वास नहीं; प्रतिष्ठा है पर प्रेम नहीं। श्रम घटा है, आराम बढ़ा है, किन्तु स्वास्थ्य चौपट होता चला जा रहा है।

युग निर्माण का अर्थ है इस उलटे को उलटकर सीधा करना। जिन दिनों परम पूज्य गुरुदेव ने 'युग निर्माण योजना' की उद्घोषणा की थी, उन दिनों लगभग दो हजार वर्षों की गुलामी के प्रभाव से दबी-कुचली मानवता में ऋषि प्रणीत सनातन संस्कृति के आदर्शों को पुनः स्थापित करने की चुनौती प्रमुख थी। विकृत चिंतन, अंधविश्वास, रूढ़ियों और कुरीतियों से मानवता को मुक्ति दिलाई जानी थी। लेकिन आज तथाकथित स्वतंत्रता, प्रगति और आधुनिकता के नाम पर जो नई चुनौतियाँ सामने आ खड़ी हुई हैं, वे और भी ज्यादा चिंताजनक हैं। इन दिनों समाज में पनपती विकृत विचारधारा ने सनातन संस्कृति की जड़ों पर ही प्रहार किया है, जिसके परिणाम स्वरूप नई पीढ़ी में अध्यात्मवादी जीवनदर्शन के प्रति अनास्था बढ़ती दिखाई दे रही है और 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की सनातन मान्यताएँ धूल धूसरित होती जा रही हैं।

गायत्री परिवार का सर्वोपरि लक्ष्य है समाज में आत्मवादी जीवन दर्शन की पुनः स्थापना, आत्मीयता का व्यापक विस्तार। गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना अभियान से लेकर आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान के अंतर्गत चलाए जा रहे समस्त कार्यक्रमों का मूल लक्ष्य है प्यार और सहकार से भरेपूरे परिवारों का निर्माण। गत अंक में आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान के अंतर्गत चलाए जा रहे छः कार्यक्रमों-(1) दम्पति शिविरों का आयोजन, (2) गर्भोत्सव कार्यक्रम (गर्भ संस्कार), (3) माँ की संस्कारशाला एवं बच्चों के विविध संस्कार, (4) बाल संस्कारशालाएँ, (5) कन्या/किशोर संस्कार शाला एवं प्रशिक्षण शिविर, (6) युवा जागृति अभियान की जानकारी सार-संक्षेप में दी जा चुकी है।

इन दिनों समाज में नवचेतना जाग रही है। बदलती सामाजिक व्यवस्थाओं का दंश झेल रही मानवता का दर्द स्पष्ट दिखाई दे रहा है। ऐसे में हमें अपने विशिष्ट कार्यक्रमों के माध्यम से समाज को सन्मार्ग दिखाने के लिए, त्रस्त मानवता को संताप से मुक्ति दिलाने के लिए आगे आना चाहिए।

परिवार क्या है?

परम पूज्य गुरुदेव ने प्रज्ञा पुराण के 'परिवार निर्माण' खण्ड में जो चिंतन और मार्गदर्शन दिया है, वह हर व्यक्ति को पढ़ना चाहिए। उसके ध्यानपूर्वक अध्ययन के बाद देव परिवारों के निर्माण में सक्रिय योगदान देना किसी के लिए भी कठिन नहीं रह जाता।

परिवार केवल व्यक्तियों का समूह नहीं, परस्पर प्रेम और त्याग की पवित्र भावनाओं से विनिर्मित एक छोटा समाज ही है। इस संदर्भ में प्रज्ञा पुराण के परिवार निर्माण खण्ड के प्रथम अध्याय के श्लोक 22-26 की व्याख्या में लिखा है:-

सामान्य रूप से एक कुटुंब के व्यक्ति परिवार माने जाते हैं। परंतु ऋषि कहते हैं यह सद्भावना और सहकार के आधार की पृष्ठभूमि पर विनिर्मित पावन संगठन है। इस आधार पर यदि एक कुटुंब के व्यक्ति भी स्वार्थ भरी आपाधापी के बीच रहते हैं, सद्भाव, सहकार उनमें नहीं है, तो वह भी परिवार नहीं; मजबूरी में एक बाड़े में बंद जानवरों जैसे लोग हैं।

दूसरी ओर कोई भी व्यक्ति यदि परस्पर उच्च उद्देश्यों को लक्ष्य करके सद्भाव-सहकारपूर्वक साथ-साथ रहते हैं, तो वह एक परिवार है। ऐसा परिवार सभी के लिए आवश्यक होता है। ऋषि, संत आदि आश्रमों में इसी आधार पर परिवार भाव बनाकर रहते हैं। जहाँ परिवार भाव है, वहाँ कोई भी समूह परिवार कहलाता है।

कोई जरूरी नहीं कि व्यक्ति विवाह करके, परिवार बसाकर ही गृहस्थ धर्म निभाए। यदि वह एक परिकर विशेष को पारिवारिकता का पोषण देता है, तो प्रकारांतर से परिवार धर्म की साधना ही करता है। महत्ता संगठन की, संरचना की नहीं, उस भावना की, निष्ठा की है, जो ऐसी प्रक्रिया अपनाने पर अंतःकरण में विकसित होती है।

अखिल विश्व गायत्री परिवार स्नेह, समन्वय, सहकारयुक्त ऐसी ही उदात्त भावनाओं के आधार पर बना विराट देव परिवार है। भारतीय सनातन परम्परा में घर के नौकर-चाकर, पशु-पक्षियों को भी परिवार का ही सदस्य माना और उसी भाव से पोषण दिया गया है। हमारा लक्ष्य 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की सनातन भावना को चरितार्थ करते हुए समाज में सतत आत्मीयता का विस्तार करते जाना और इन्हीं पारिवारिक भावनाओं को पुष्ट करना है। हमारी देव परिवार निर्माण की यात्रा निजी परिवार को परस्पर, स्नेह, सद्भाव, सहकार और संस्कारयुक्त बनाने से आरंभ होती है और प्रज्ञा मण्डलों, शक्तिपीठों, संगठनों में भी ऐसी ही उदात्त भावनाओं का पोषण करते हुए समाज निर्माण की ओर आगे बढ़ती है।

गृहस्थ एक योग साधना है

गृहस्थ धर्म का पालन और परिवार निर्माण एक योग साधना है। प्रज्ञा पुराण के परिवार खण्ड में वर्णन है-

योग के नाना रूपों का एक ही प्रयोजन है- आत्मभाव को विस्तृत करना, तुच्छता को महानता के साथ बाँध देना। गृहस्थ धर्म का पालन करना एक प्रकार से योग की साधना करना है। अनेक प्रकार के योगों में एक 'गृहस्थ योग' भी है। इसमें परमार्थ, सेवा, प्रेम, सहायता, त्याग, उदारता और बदला पाने की इच्छा से विमुखता, यही दृष्टिकोण प्रधान है। यह योग महत्त्वपूर्ण, सर्वसुलभ तथा स्वल्प श्रम-साध्य है।

भगवान मनु का कथन है कि गृहस्थाश्रम में पुरुष, उसकी पत्नी और संतान मिलकर ही एक पूर्ण 'मनुष्य' बनता है, उनकी आत्मीयता का दायरा क्रमशः बढ़ता ही जाता है। अकेले से पति-पत्नी दो में, फिर बालक के साथ तीन में, संबंधियों में, पड़ोसियों में, गाँव, प्रांत, प्रदेश, राष्ट्र और विश्व में यह आत्मीयता क्रमशः बढ़ती है। अंततः समस्त जड़-चेतन में आत्मभाव फैल जाता है और अंत में जीव पूर्णतया आत्मसंयमी हो जाता है। गृहस्थ योग की छोटी-सी सर्वसुलभ साधना जब अपनी विकसित अवस्था तक पहुँचती है तो आत्मा परमात्मा बन जाता है और पूर्णता की प्राप्ति होती है।

यह कार्य सघन आत्मीयता, समग्र दूरदर्शिता एवं समर्थ तत्परता से ही संभव हो सकता है। इसके लिए धरती जैसी सहनशीलता, पर्वत जैसा धैर्य धारण और सूर्य जैसी प्रखरता का समन्वय सँजोना पड़ता है। इन सद्गुणों के अभाव में सुसंस्कृत-सुसंस्कारी परिवार के निर्माण का संयोग संभव नहीं।

आत्ममंथन-आत्मसुधार

परम पूज्य गुरुदेव लिखते हैं-''*गृहस्थाश्रम समाज को सुनागरिक देने की खान है। भक्त, ज्ञानी, संत, महात्मा, सुधारक, महापुरुष, विद्वान, पंडित गृहस्थाश्रम से ही निकलकर आते हैं। उनके जन्म से लेकर शिक्षा-दीक्षा, पालन-पोषण, ज्ञानवर्द्धन गृहस्थाश्रम के बीच ही होता है। परिवार के बीच ही मनुष्य की सर्वोपरि शिक्षा होती है। गृहस्थाश्रम ही समाज के संगठन, मानवीय मूल्यों की स्थापना, समाज निष्ठा, भौतिक विकास के साथ-साथ मनुष्य के आध्यात्मिक-मानसिक विकास का क्षेत्र है। गृहस्थाश्रम ही समाज के व्यवस्थित स्वरूप का मूलाधार है।*''

हम आत्मचिंतन और आत्ममंथन करें। क्या हम अपने गृहस्थ जीवन में ऐसी आदर्श व्यवस्थाओं का पालन कर रहे हैं, अपने परिवारी जनों को ऐसा उत्कृष्ट वातावरण दे रहे हैं? हमारा पारिवारिक जीवन कितना सुखी और संतुष्ट है? हमारे पारिवारिक रिश्तों में कितनी मधुरता है? अपने बच्चों के संस्कार और व्यवहार से हम कितने संतुष्ट हैं? हमारे बुजुर्ग हमसे कितने प्रसन्न रहते हैं? क्या हम अपने मित्र और साथी-सहकर्मियों के साथ स्नेह-सामंजस्य बिठा पाते हैं? इस प्रकार की आत्मसमीक्षा हमें स्वयं अनुभव करा देगी कि हम अपने परिवार निर्माण के नैतिक उत्तरदायित्वों का कितनी कुशलता के साथ निर्वहन कर पा रहे हैं?

जैसे राष्ट्रध्वज और सांस्कृतिक प्रतीक हमें आत्मगौरव का बोध कराते हैं, वैसे ही हर घर के सामने एक नाम-पट्टिका लगाई जाये, जिस पर लाल मशाल हो, 'व्यसनमुक्त देव परिवार' लिखा हो। यह हर समय अपने संकल्प और दायित्व की याद दिलायेगा, औरों को भी प्रेरणा देगा।

उपरोक्त प्रश्नों का यदि सकारात्मक उत्तर मिलता है तो अपने गुण, कर्म, स्वभाव के परिष्कार और स्नेह, संवेदना, सामंजस्य, सहकार के विस्तार की योग साधना जारी रखते हुए अपने संगठन और समाज में भी ऐसा ही वातावरण विनिर्मित करने के लिए उदारतापूर्वक आगे आना चाहिए। यदि अपने परिवार की स्थिति सामंजस्यपूर्ण और संतोषजनक न हो, तो उसके कारण एवं निवारण की ओर ध्यान दिया जाना आवश्यक हो जाता है। आत्मचिंतन, आत्ममंथन और आत्मसुधार की यह प्रक्रिया अपना कर प्रत्येक व्यक्ति परिवार निर्माण की दिशा में सार्थक पहल कर सकता है।

हम आदर्श जीवन शैली अपनाएँ

गायत्री परिवार से जुड़े परिजनों का इस संदर्भ में विशेष दायित्व बनता है। परम पूज्य गुरुदेव लिखते हैं-

परिवार के बड़े लोग छोटों के सामने अपना आदर्श रखें, ताकि वे उनका अनुसरण कर सकें। दुष्प्रवृत्तियाँ तो कहीं से भी दौड़ती हैं, पर सत्प्रवृत्तियों से पारिवारिक सदस्यों को प्रभावित करना हो, तो उसके लिए बड़ों को भी अपना उदाहरण प्रस्तुत करना होगा। प्रभाव उपदेशों का नहीं, सामने प्रस्तुत होने वाले आचरण का पड़ता है। (प्रज्ञा पुराण, खण्ड-3/1/48-51)

परिवार निर्माण एक समयसाध्य प्रक्रिया है। श्रेष्ठ व्यक्तित्वों के निर्माण के लिए उपयुक्त वातावरण की आवश्यकता होती है। ऐसा वातावरण, जिससे परिवार के सभी सदस्यों में आस्था, परस्पर प्रेम, त्याग और सेवा की भावना विकसित होती रहे। अपने देव परिवार निर्माण अभियान के अंतर्गत हमें घर-घर में ऐसा ही वातावरण बनाने के लिए लोगों को प्रेरित और प्रोत्साहित करना है।

देव परिवार के कुछ आदर्श कार्यक्रम :-

- घर में सद्बुद्धि दायिनी एवं पाप नाशिनी गायत्री की भाव भरी उपासना का नियमित क्रम तो अनिवार्य रूप से चलना ही चाहिए। इसके लिए घर में देव स्थापना एवं गृह मंदिर की स्थापना हो। परिवार में आरती-प्रार्थना का सामूहिक क्रम चले।
- घर में तुलसी चौरा हो, सूर्यार्घ्यदान की परंपरा हो।
- परिवार में सद्विचार और सुसंस्कारिता संवर्धन के लिए बलिवैश्व देव यज्ञ किया जाये।
- परिवार के सभी सदस्यों में साथ-साथ भोजन, स्वाध्याय, पारिवारिक चर्चा, संवाद की परंपरा हो।
- यज्ञ-संस्कारों की आदर्श परंपरा अपनाई जाये।
- सेवा और दान की वृत्ति विकसित करने के लिए घर्मघट/ ज्ञानघट स्थापित हों।
- युग साहित्य पुस्तकालय की स्थापना की जाये।
- मिशन की पत्र-पत्रिकाएँ मँगाई जायें।
- घर में महापुरुषों के जीवनादर्शों की चर्चा हो। बड़े-बुजुर्गों के तप-त्याग की गाथाओं का स्मरण कराया जाता रहे। कथा-कहानियों के माध्यम से बच्चों को बड़ा आदमी नहीं, सद्गुणी-संस्कारवान महापुरुष बनने के लिए प्रेरित किया जाये।
- अपव्यय और फैशनपरस्ती से बचने का आदर्श प्रस्तुत किया जाये।

समय के प्रवाह, परिस्थितिवश अथवा अभ्यस्त स्वभाव के वश प्रचलित परंपराओं को तोड़ना और मोड़ना कठिन हो जाता है। ऐसे में सामूहिक प्रयास-पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है। गायत्री परिवार द्वारा 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान के अंतर्गत चलाए जा रहे कार्यक्रम ऐसे ही प्रयास हैं। इन कार्यक्रमों ने लाखों लोगों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया है। समय की माँग है कि इन प्रयासों को और भी प्रभावशाली बनाया जाये। हमारा जनसंपर्क अभियान निरंतर बढ़ता रहे। हम अपने जीवन से समाज के समक्ष आदर्श प्रस्तुत करें। अपनी शाखा/संगठन में ऐसा वातावरण विनिर्मित करें जो सभी को प्रभावित करे। गृहस्थधर्म पालन की यह योग साधना परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष में हमारी एक आदर्श श्रद्धांजलि होगी।

हरियाली तीज पर श्रवण कुमार बनी बेटियाँ

5100 बालिकाओं ने वृक्ष काँवड़ यात्रा निकाली, 10,000 वृक्षों की पौध रोपी

धौलपुर। राजस्थान : गायत्री परिवार धौलपुर के कार्यकर्त्ताओं और स्थानीय लोगों ने हरियाली तीज के दिन एक पेड़ जन्मदात्री माँ के नाम और 'एक पेड़ पालन पोषण करने वाली, सबको धारण करने वाली धरती माता के नाम' से एक अनूठा आयोजन किया। लगभग 5100 बालिकाओं ने वृक्ष काँवड़ यात्रा निकाली। वृक्ष काँवड़ यात्रा को सैंपऊ एसडीओ ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। हनुमान मंदिर पिपेहरा बसईनवाब से प्रारंभ हुई वृक्ष काँवड़ यात्रा में 15 पंचायतों की बालिकाएँ शामिल हुईं। इन बालिकाओं ने अपने-अपने निज निवास के आसपास 10,000 पौधे लगाए और लोगों को वितरित किए।

एक पेड़ जन्मदात्री माँ के नाम और एक पेड़ पालन करने वाली धरती माँ के नाम

आयोजन का मंच संचालन अतरसिंह कुशवाहा ने किया। गायत्री परिवार जयपुर से मंजू सैनी, कामां से उमा शर्मा, धौलपुर से प्रतिभा गुप्ता, खण्डवा (म.प्र.) से देवकन्या पूर्णिमा पंवार, रिद्धिमा ने वृक्ष पूजन किया।

युवाओं की टोली ने सँभाली व्यवस्थाएँ

बालिकाओं ने एक काँवड़ के साथ दो पौधे कंधे पर उठाए। गायत्री परिवार की ओर से आगरा-लखनऊ की नर्सरी से 27 उत्तम किस्म के फलदार, फूलदार, छायादार और औषधीय गुणों से युक्त पौधे खरीद कर मँगाए गए। अतरसिंह कुशवाहा, प्रतिभा गुप्ता, पूर्व प्रधान रामहेत कुशवाहा और उनकी सहयोगी टीम ने इसमें महती भूमिका निभाई। गायत्री प्रज्ञा मंडल बसई नवाब की युवा टीम ने अन्य व्यवस्थाएँ सँभालीं। क्षेत्र के गणमान्य नागरिकों ने यात्रा का पुष्प वर्षा कर स्वागत किया।

बेटियों ने लिया दहेज मुक्त विवाह एवं समाजसेवा का संकल्प

इस अवसर पर कार्यक्रम में भाग ले रही समस्त कन्याओं को गायत्री मंत्र लेखन और दहेज रहित विवाह का संकल्प भी दिलाया गया। उन्हें जीवन में आध्यात्मिक और सामाजिक दोनों ही जिम्मेदारियों को निभाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। गायत्री परिवार राजस्थान के ट्रस्टी डॉ. प्रशांत भारद्वाज ने जिले के कार्यकर्त्ताओं को आगामी वर्ष 2026 में परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी के अवसर पर पूरे राजस्थान के जिलों में कन्याओं को मिशन की गतिविधियों से जोड़ने के लिए प्रेरित किया। सभी ने यह संकल्प लिया कि वे अपने जीवन को और अपनी बेटियों को हरियाली और शिक्षा के माध्यम से उज्ज्वल बनाएँगी।

इस अवसर पर धौलपुर से बलवीर सिंह राना, प्रताप सिंह राना, कैलाश चंद्र तोमर, धीर सिंह जादौन, नारायण सिंह यदुवंशी, नत्थीलाल शर्मा सहित सैकड़ों कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। जिला प्रशासन का पूरा सहयोग मिला।

श्रद्धासिक्त स्वेद बिंदुओं से सींच कर धरती माँ को उढ़ायी जा रही है हरी चूनर

बायें बारां के बांसथूनी ग्राम में वृक्षारोपण, मध्य में जहानाबाद में वृक्षारोपण करते केन्द्रीय मंत्री, दायें जीपीवाईजी कोलकाता ने मनाया 774वाँ वृक्षारोपण सप्ताह

गौशाला में 300 पेड़ लगाये

बाराँ। राजस्थान

गायत्री परिवार के युवा संगठन 'दिया' द्वारा किशनगंज तहसील के गाँव बांसथूनी स्थित माधव गोविंद गौशाला में 30 अगस्त को वृहद् वृक्षारोपण अभियान चलाया गया। इस अवसर पर बरगद और पीपल के 300 पौधे रोपे गए और उन्हें ट्री-गार्ड से सुरक्षित किया गया। डीएफओ श्री अनिल यादव कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे और कार्यक्रम की अध्यक्षता समुद्रसिंह चौधरी ने की। दिया की टीम के साथ विभिन्न समाजों के प्रमुख प्रतिनिधियों एवं कार्यकर्त्ताओं की कार्यक्रम में भागीदारी रही।

वृक्ष महोत्सव मनाया, लगाए 3400 से अधिक पौधे

गायत्री परिवार की युवा इकाई 'दिया छत्तीसगढ़' द्वारा 1 जुलाई 2025 को पूरे प्रदेश में वृक्ष महोत्सव मनाया गया था। इस विशेष अभियान के अंतर्गत दुर्ग, भिलाई, बिलासपुर, कोरवा, अंबिकापुर, गौरेला-पेड्रा-मरबाही (तक्रू), मुंगेली, जांजगीर, रायगढ़, चांपा, कोरिया, वैकुण्ठपुर, अनूपपुर, जशपुर, राजनांदगाँव सहित छत्तीसगढ़ प्रान्त के सभी प्रमुख जिलों में पौधारोपण के भव्य और उत्साहवर्धक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में 3400 से अधिक पौधों का रोपण किया गया।

सतत सक्रियता, अथाह उत्साह

जहानाबाद। बिहार

प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ जहानाबाद द्वारा चलाया जा रहा साप्ताहिक रविवासरीय वृक्षारोपण अभियान पूरे क्षेत्र में समाज के लिए प्रेरणादायी अभियान बन गया है। इसके अंतर्गत इमलिया ग्राम में 200 पौधों का रोपण किया गया, जिनमें महोगनी और सागवान मुख्य रहे।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर भारत सरकार के कोयला एवं खान राज्य मंत्री श्री सतीश चंद्र दूबे जी भी उपस्थित हुए।

30 अगस्त को प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ एवं यूको क्लब फॉर मिशन लाइफ आदर्श मध्य विद्यालय घोषी के द्वारा विद्यालय परिसर में विशेष पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस अवसर पर 50 महोगनी के पौधों का रोपण किया गया।

174354 वृक्षों की पौध लगाई

कोलकाता। प. बंगाल

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता ने अपने रविवासरीय वृक्षारोपण के सतत अभियान में 774वें रविवार के दिन आम, नीम, अशोक और आँवला के 110 पौधे रोपे। उल्लेखनीय है कि जीपीवायजी कोलकाता द्वारा इन 774 रविवारों में कुल 174354 वृक्षों की पौध लगाई जा चुकी है। इनमें से अधिकांश ने वृक्षों का रूप ले चुके हैं।

नवयुग दल ने 301 पौधे लगाए

टाटानगर। झारखण्ड

नवयुग दल, युवा प्रकोष्ठ टाटानगर ने 10 अगस्त को गवर्नमेण्ट मॉडल स्कूल, बड़ा बाजार में 301 वृक्षों की पौध लगाई। सभी बच्चों को एक-एक पौधे को गोद लेकर उसकी रक्षा करने का संकल्प कराया गया। वृक्षारोपण के लिए सभी पौधे भागेरिया फाउण्डेशन ने उपलब्ध कराए थे।

विशेष ज्ञातव्य

सभी परिजनों से निवेदन है किसी भी प्रकार से ऑनलाइन कर्मकाण्ड और संगीत सीखने की परम्परा नहीं है। यह गुरु-शिष्य परम्परा है। गुरु-संरक्षण में समीप रहकर श्रद्धा के साथ कर्मकाण्ड और संगीत विद्या ग्रहण करने का नियम है। **इसलिए निवेदन है कि यदि कहीं भी कर्मकाण्ड या संगीत का कोई ऑनलाइन प्रशिक्षण चल रहा है तो तत्काल बन्द कर दिया जाए और जिन्हें भी कर्मकाण्ड या संगीत में रुचि है, वे परिजन शान्तिकुञ्ज में सम्पर्क करें।** परिजन अनुमति लेकर यहाँ प्रशिक्षण ले सकते हैं। यहाँ पर प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था है।

व्यवस्थापक, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

नवयुग के प्रेरणादीप

108 गाँवों की जागीरदार श्रीमती ममता बैरागी

संचालिका : गायत्री विद्या मंदिर, ग्राम उमरनी, नागदा, जिला उज्जैन, मध्य प्रदेश एवं व्यवस्थापिका-गायत्री शक्तिपीठ नागदा

परम पूज्य गुरुदेव ने एक समय पर 10,000 हीरों का हार पहनने की इच्छा व्यक्त की थी। इसी प्रकार उन्होंने अपने बच्चों को 10-10 गाँवों की जागीरदारी सौंपने की बात भी की थी। आज गुरुदेव-माताजी की सूक्ष्म एवं कारण सत्ता अपनी ऐसी ही एक बेटी को पाकर गद्गद होगी, जिसने उनकी आकांक्षाओं पर अक्षरशः खरे उतरते हुए 10 नहीं, पूरे 108 गाँवों की आध्यात्मिक जागीरदारी बड़ी कुशलता के साथ सँभाल रखी है। इन 108 गाँवों के हजारों घर एक विशाल देव परिवार की भाँति जुड़े हुए हैं।

इस वर्ष के आरंभ में श्रीमती ममता बैरागी की प्रज्ञा अभियान से बात हुई, तब उन्होंने जन्मशताब्दी वर्ष-2026 तक अपने देव परिवार को पाँच गुना विस्तार देने का संकल्प लिया था। गुरुदेव-माताजी के विशिष्ट आशीर्वाद-अनुदानों से आने वाले दिनों में उनका वह संकल्प बड़ी सफलता के साथ पूरा होने जा रहा है। नागदा में उनके संयोजन में 1 जनवरी 2026 से 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन होने जा रहा है। ममता दीदी की कार्यकुशलता के परिणामस्वरूप इस यज्ञ के प्रयाज में 5000 घरों तक शक्ति साधना कलश ले जाने और उसके समक्ष उपासना-साधना करने का अभियान इन दिनों चल रहा है।

गुरुसत्ता को अभूतपूर्व, अद्वितीय श्रद्धाञ्जलि

इस वर्ष नागदा और उसके आसपास के गाँवों में 1008 अखण्ड ज्योति, 1008 युग निर्माण योजना तथा 1008 प्रज्ञा अभियान घर-घर पहुँच रहे हैं। श्रीमती बैरागी बताती हैं कि उन्हें ये पत्रिकाएँ बाँटने कहीं जाना नहीं पड़ता, हर गाँव-मोहल्ले, कॉलोनी के परिजन स्वतः शक्तिपीठ पर आकर इन्हें ले जाते हैं और अपने-अपने क्षेत्र में पूरी निष्ठा एवं नियमितता के साथ वितरित करते हैं। उनके द्वारा जन-जन में जगाई गई इस आस्था का ही परिणाम है कि जनवरी में प्रस्तावित गायत्री महायज्ञ की स्वीकृति मिलते ही अगस्त माह से नागदा की हर कॉलोनी, मुहल्ले में और समीपवर्ती गाँवों में महायज्ञ के निमित्त शक्ति साधना कलशों की स्थापना का अभियान आरंभ हो गया है।

हर गाँव, मोहल्ले, कॉलोनी में कुल 108 शक्ति साधना कलश स्थापित किए जायेंगे। हर दिन वह कलश नए-नए घरों में ले जाया जायेगा। उसके समक्ष आरती, प्रार्थना, चालीसा पाठ, उपासना, साधना का क्रम सम्पन्न होगा।

श्रीमती ममता बैरागी ने बताया कि हर कॉलोनी, मोहल्ले, गाँव में समारोहपूर्वक शक्ति साधना कलश की स्थापना की जा रही है। स्थापना के साथ ही उन्हें एक-एक कुण्ड की जिम्मेदारी सौंपी जा रही है। महायज्ञ की कलश यात्रा से लेकर यज्ञ की पूर्णाहुति एवं उसके अनुयाज तक की जिम्मेदारियाँ उन्हें अभी से सौंप दी और समझा दी गई हैं, जिन्हें बड़े उत्साह के साथ निभाया जा रहा है।

प्रज्ञा अभियान के 10,000 सदस्य

1 जनवरी 2026 से आरंभ होने वाले 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में अपने देव परिवार को पाँच गुना विस्तार देने की घोषणा श्रीमती ममता बैरागी ने अगस्त, 2025 में ही कर दी थी। उन्होंने प्रज्ञा अभियान को बताया कि 1 जनवरी 2026 से गोद लिये गाँवों और नागदा शहर के मुहल्ले-कॉलोनियों में पाक्षिक प्रज्ञा अभियान के 10,000 सदस्य बनाये जायेंगे। इनका चंदा यज्ञ के समय ही जमा करा दिया जायेगा।

आश्वमेधिक पुरुषार्थ

प्रज्ञा अभियान से हुई पिछली वार्ता में श्रीमती ममता बैरागी ने कहा था कि अश्वमेध यज्ञ जैसे विराट आयोजन के संयोजन की क्षमता तो उनमें नहीं है, लेकिन वे अपने देव परिवार निर्माण के संकल्प से उस प्रयोजन को पूरा करना चाहती हैं। हम कल्पना करें कि ऐसा कौन-सा अश्वमेध यज्ञ होगा, जिसके पूर्व में और महायज्ञ के बाद में भी 1000 से अधिक घरों से इस प्रकार से नियमित पारिवारिक संपर्क बना हो। यज्ञ के बाद तो यह संख्या पाँच गुनी होने जा रही है। भले ही यह यज्ञ घोषित अश्वमेध यज्ञ न हो, लेकिन परम पूज्य गुरुदेव की दृष्टि में संकल्प, पुरुषार्थ और उपलब्धियों की दृष्टि से संभवतः यह यज्ञ अश्वमेध यज्ञ से कम भी नहीं होगा।

साधना से सिद्धि

श्रीमती ममता बैरागी अपनी किशोरावस्था से, पिछले लगभग 27 वर्षों से एक अत्यंत विनम्र, समर्पित प्राणवान कार्यकर्त्ता के रूप में सक्रिय हैं। वे उच्च कोटि की साधिका हैं और शक्तिपीठ पर ही रहती हैं। अपनी व्यक्तिगत आय का 70% हिस्सा मिशन के कार्यों के लिए खर्च कर देती हैं। प्रतिदिन तीनों काल की ध्यान साधना करती हैं। राग, द्वेष रहित स्वभाव, किसी से वैर-विरोध नहीं, सबको अपने परिवार के सदस्य की तरह मानते हुए स्नेह देना, सहयोग करना और सम्मान देना उनके स्वभाव में है। नागदा में मिशन का इतना व्यापक विस्तार उनकी उपासना और जीवन साधना का ही परिणाम है।

प्रज्ञा अभियान की सदस्यता/नवीनीकरण के लिए बैंक खाता विवरण : SHRI VEDMATA GAYATRI TRUST (TMD) SBI AC : 306 3160 6578 (11 Digit) IFSC : SBIN0010588
इस बैंक अकाउंट में धनराशि जमा कराकर ट्रांस्फर प्रूफ और अपना पता पिनकोड व मोबाइल नंबर सहित व्हॉट्सएप : 9258369725 पर अथवा pragyaabhiyan@awgp.org पर भेज दें।

रक्तदान के लिए मिला अंतर्राष्ट्रीय सम्मान

प्रांतीय प्रकोष्ठ टाटानगर ने 60 शिविर लगाकर 8000 यूनिट से अधिक रक्तदान किया

टाटानगर। झारखण्ड

गायत्री परिवार टाटानगर के युवा प्रकोष्ठ नवयुगदल को धनबाद के समबोधि रिसॉर्ट में 'संघर्ष ज्योति सम्मान' से सम्मानित किया गया। यह अंतर्राष्ट्रीय सम्मान समारोह रोटी बैंक और भूली ब्लड बैंक धनबाद के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित किया गया था। इसमें नेपाल, भूटान के साथ-साथ भारत के 18 राज्यों के सामाजिक कार्यकर्त्ता शामिल हुए थे। नवयुग दल के प्रतिनिधियों ने यह सम्मान मुख्य अतिथि झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास जी से ग्रहण किया।

नवयुग दल टाटानगर को यह सम्मान रक्तदान के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्य के लिए प्रदान किया गया है। ज्ञात हो कि पिछले 18 वर्षों में झारखण्ड के इस प्रांतीय युवा संगठन ने कुल 60 रक्तदान शिविर लगा कर 8000 यूनिट से अधिक रक्त एकत्रित किया है। गायत्री परिवार की ओर से नवयुग दल रक्तदान शिविर कार्यक्रम के संयोजक श्री संजीव सिन्हा, श्री प्रशांत कालिंदी, श्री अमित वर्मा, श्री आलोक नारायण सिंह के साथ प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ झारखंड के समन्वयक श्री संतोष कुमार राय कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

पूर्व मुख्यमंत्री श्री रघुवर दास जी से सम्मान प्राप्त करते हुए

बाढ़ पीड़ित परिवारों की सहायता की

जगदलपुर, बस्तर। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार ट्रस्ट जगदलपुर एवं विकासखंड समन्वय समिति लोहंडीगुड़ा के द्वारा ग्राम मादर में बाढ़ पीड़ित परिवारों को खाद्य सामग्री एवं तरह-तरह के वस्त्र प्रदान किए गए। राहत सामग्री वितरण के लिए मुख्य प्रबंध ट्रस्टी जयश्री श्रीवास्तव, सहायक ट्रस्टी निलेश ठाकुर, प्रेम नारायण माथुर, सुभद्रा सिंह, शारदा पटेल, नित्यानंद यादव, राम अवतार कौशिक, पीलू राम कश्यप, सुकालू राम कश्यप, सुधु राम, मंगतराम, सच्चिदानंद देशमुख, श्रीमती नैना, राजेश, दुर्गेश बघेल, प्रज्ञा सिंह आदि परिजन बाढ़ पीड़ितों के बीच पहुँचे थे। सबने मिलकर बाढ़ पीड़ितों के स्वास्थ्य लाभ एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए प्रार्थना की व उनका मनोबल बढ़ाया। इस राहत कार्य में तीन क्विंटल चावल, 50 साड़ी, 25 शॉल, पैंट, शर्ट, बिस्किट, केले आदि वितरित किए गए।

भारतीय उच्चायोग में योग पर कार्यक्रम

कुआलालम्पुर। मलेशिया

गायत्री परिवार मलेशिया द्वारा 9 अगस्त, श्रावणी पूर्णिमा के पावन अवसर पर कुआलालम्पुर स्थित भारतीय उच्चायोग एवं भारतीय संस्कृति केन्द्र के सहयोग से योग पर केन्द्रित विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में 50 से 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें स्थानीय भारतीय मूल के नागरिकों के साथ-साथ चीनी समुदाय के सदस्य भी शामिल हुए। सभी प्रतिभागियों ने योग के प्रति गहरी रुचि और समर्पण का भाव दर्शाया।

कार्यक्रम का शुभारंभ परम पूज्य गुरुदेव, परम वंदनीया माताजी एवं गायत्री माता के चित्रों के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं मंत्रोच्चार के साथ हुआ। योग सत्र का संचालन गायत्री परिवार की श्रीमती धनिष्ठा सामरिया द्वारा किया गया, जिसमें प्रतिभागियों को योग के विभिन्न आसनों और उनके शारीरिक एवं मानसिक लाभों से परिचित कराया गया।

कार्यक्रम के समापन पर उपस्थित सभी प्रतिभागियों को पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित प्रेरणादायक साहित्य निःशुल्क भेंट किया गया। गायत्री परिवार मलेशिया की ओर से श्री हेमंत वर्मा ने आयोजन के समन्वय और संचालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कुआलालंपुर के भारतीय उच्चायोग में चल रहा योग कार्यक्रम

प्रखर गायत्री साधक स्व. अगमवीर सिंह जी को श्रद्धांजलि दी

पूरनपुर, पीलीभीत। उत्तर प्रदेश

तन, मन, धन और भावनाओं से स्वयं को पूरी तरह गुरुदेव-माताजी एवं उनके मिशन को समर्पित, पूरनपुर के मूल निवासी स्व. अगमवीर सिंह जी को उनके गृह नगर में अत्यंत भावभरी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई। दिनांक 12 अगस्त को माता भगवती देवी गौशाला, प्रसादपुर, पूरनपुर में प्रातःकाल आयोजित गायत्री महायज्ञ के समय गायत्री परिवार के जिला समन्वयक श्री लालाराम मौर्य सहित प्रमुख परिजनों और अन्य संस्थाओं से आए गणमान्यों ने उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किए। इस अवसर पर उनकी गुरुनिष्ठा एवं जीवन-आदर्शों का भावभरा स्मरण किया गया। उल्लेखनीय है कि स्व. श्री अगमवीर सिंह जी का निधन 27 जुलाई को शान्तिकुञ्ज में हुआ था।

स्व. श्री अगमवीर सिंह जी के अनुज श्री समरवीर जी ने उनके दृढ़संकल्पशील, कर्मठ एवं जुझारू व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने के साथ उन्हें एक कुशल कृषक बताया। उल्लेखनीय है कि जिस माता भगवती देवी गौशाला, प्रसादपुर में यह श्रद्धाञ्जलि कार्यक्रम आयोजित हुआ, स्व. श्री अगमवीर सिंह जी ने वह पचपेड़ा फार्म की अपने हिस्से की सम्पूर्ण साढ़े बारह एकड़ भूमि श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शान्तिकुञ्ज को दान कर दी थी।

महिला मण्डल, पूरनपुर की अध्यक्षा सुश्री चरणजीत कौर, गौशाला के व्यवस्थापक श्री अनन्तराम पालिया एवं अनेक परिजनों ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से बाबूजी की स्मृतियों को साझा किया। कार्यक्रम के अंत में दिवंगत देवात्मा की स्मृति में वृक्षारोपण भी किया गया।

जयपुर में कन्या कौशल कार्यक्रम

80 हजार कन्याओं तक पहुँचाया जा रहा है युग संदेश

जयपुर। राजस्थान : 15 अगस्त को जयपुर स्थित वेदना निवारण केंद्र पर कार्यकर्त्ता गोष्ठी सम्पन्न हुई। इसमें जयपुर शहर एवं ग्रामीण जिले के 426 स्कूलों और 15 कॉलेजों के माध्यम से लगभग 80,000 कन्याओं तक कन्या कौशल कार्यक्रम का संदेश पहुँचाने का संकल्प लिया गया। प्रांतीय स्तर पर यह लक्ष्य 1,25,000 कन्याओं तक पहुँचने का है। मंत्रलेखन पुस्तिकाओं के वितरण हेतु भी यह संख्या निर्धारित की गई है। अब तक 22,000 पुस्तिकाएँ वितरित की जा चुकी हैं।

अगले वर्ष जयपुर में 5,100 कन्याओं का ढाई दिवसीय आवासीय शिविर आयोजित होगा।

गायत्री तपोभूमि, मथुरा में पत्रिका प्रचारक सम्मेलन

मथुरा। उत्तर प्रदेश

दिनांक 19, 20 एवं 21 अगस्त 2025 को गायत्री तपोभूमि, मथुरा में पत्रिका प्रचारक सम्मेलन का सफल आयोजन हुआ। इस तीन दिवसीय सम्मेलन में देशभर से आए प्रचारक भाईयों-बहिनों ने भागीदारी की और मिशन की पत्रिकाओं–अखंड ज्योति, युग निर्माण योजना एवं प्रज्ञा अभियान पाक्षिक के प्रचार-प्रसार को गति देने हेतु विचार-विमर्श किया। प्रतिनिधियों ने बताया कि ये पत्रिकाएँ जनमानस को जागरूक करने, व्यसनमुक्ति, शिक्षा, नारी जागरण और संस्कार निर्माण जैसे अभियानों को गति देने का माध्यम बन रही हैं। साहित्य प्रचार ही युग परिवर्तन आंदोलन का सशक्त साधन है।

सम्मेलन में प्रचारकों को व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। परिजनों ने अपने अनुभव साझा किये और भविष्य की कार्ययोजना पर मार्गदर्शन प्राप्त किया। अंत में सामूहिक संकल्प के साथ सम्मेलन का समापन हुआ कि प्रत्येक कार्यकर्त्ता अपने क्षेत्र में साहित्य को घर-घर तक पहुँचाने हेतु सक्रिय योगदान देगा।

आदरणीय श्री मृत्युंजय शर्मा जी की मुख्य उपस्थिति में सम्मेलन में भाग ले रहे भाई-बहिन

विकासखंड स्तरीय संगोष्ठी

पाँचों विकासखंडों में 100-100 प्रज्ञा अभियान पाक्षिक पत्रिकाएँ वितरित करने का संकल्प लिया गया।

महासमुंद। छत्तीसगढ़ : गायत्री चेतना केंद्र सिरपुर में दिनांक 11 अगस्त को विकासखंड स्तरीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। बैठक में मुख्य रूप से 40 दिवसीय सामूहिक अनुष्ठान की पूर्णाहुति पर विशाल यज्ञ का आयोजन करने, गायत्री माता की प्राण प्रतिष्ठा 24 कुण्डीय महायज्ञ के साथ करने तथा जन्मशताब्दी वर्ष 2026 के आयोजन हेतु व्यापक सम्पर्क कर सप्त आन्दोलनों को घर-घर पहुँचाने की दिशा में प्रयास, अंशदान संबंधी बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। संगोष्ठी में बेमचा, मुदेना, तुमगाँव, अछोला, सरेकेल, झलप, सिरपुर आदि इकाइयों से परिजन उपस्थित हुए।

सुपर-50 युवा प्रशिक्षण शिविर

डाल्टेनगंज, पलामू। झारखण्ड

दिनांक 23 अगस्त को प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ झारखंड के तत्त्वावधान में गायत्री शक्तिपीठ सुदना में पलामू जिले का सुपर 50 युवा प्रशिक्षण शिविर संपन्न हुआ। प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ की ओर से श्री सुरेश यादव जी (गिरिडीह), श्री शम्भु नाथ दूबे (टाटानगर), श्री नीरज महतो (बोकारो) एवं श्री प्रियरंजन कुमार (टाटानगर) ने इस कार्यक्रम को संबोधित किया। प्रशिक्षण शिविर में जन्मशताब्दी-वर्ष में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी प्रतिभागियों को दी गई तथा उनसे जुड़ी जिम्मेदारियों से अवगत कराया गया। उल्लेखनीय है कि झारखण्ड प्रांत के प्रत्येक जिले में इस प्रकार के सुपर-50 युवा प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जा रहे हैं, ताकि जन्मशताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों को एकरूपता और पूरे उत्साह के साथ प्रदेश में चलाया जा सके।

युवाओं को संस्कार, संस्कृति और जीवन मूल्यों की शिक्षा देता श्रद्धा, कौशल संवर्धन शिविर

बदायूं। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ एवं आध्यात्मिक चेतना केन्द्र बदायूं में श्रद्धा, कौशल संवर्धन शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के विभिन्न सत्रों में प्रतिभागियों को भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं संस्कारों का महत्त्व बताया गया तथा सामाजिक उत्तरदायित्व एवं जीवन प्रबंधन के मूल सूत्रों से अवगत कराया गया। प्रातःकाल सभी को उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हेतु योगाभ्यास करवाया गया। यज्ञ के उपरांत ढपली, गायन एवं वादन का प्रशिक्षण दिया गया। कर्मकाण्ड में उल्लिखित मंत्रों के उच्चारण की विधि, दीपयज्ञ एवं अन्य संस्कारों का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

जिला समन्वयक नरेंद्र पाल शर्मा ने युवाओं को अपने आचरण एवं व्यवहार में शुचिता एवं सकारात्मकता लाने की प्रेरणा दी। संजीव कुमार शर्मा ने कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण शिविर न केवल आध्यात्मिक चेतना का विस्तार करते हैं, बल्कि युवाओं को सही दिशा, सामाजिक उत्तरदायित्व और भारतीय संस्कृति से जुड़ाव का मजबूत आधार प्रदान करते हैं।

रविवार, दिनांक 24 अगस्त को श्रद्धा, कौशल संवर्धन शिविर का समापन पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ हुआ। इस अवसर पर अनेक प्रतिभागियों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा प्राप्त की तथा बुराईयाँ छोड़कर अच्छाइयाँ अपनाने की देव दक्षिणा अर्पित की। शिविर के अंत में युवाओं को सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक करते हुए विदाई दी गई।

नौका जल में रह सकती है, किन्तु जल नौका में नहीं रहना चाहिए। उसी प्रकार साधक संसार में रहे, किन्तु संसार का माया मोह साधक के भीतर न रहे।

जन्मशताब्दी का जनसंपर्क अभियान

जम्मू-कश्मीर में कार्यकर्त्ताओं में उत्साह और गणमान्यों का मिल रहा है शानदार समर्थन

दिव्य अखण्ड दीपक एवं परम वंदनीया माताजी की जन्म शताब्दी के विशिष्ट आयोजनों के माध्यम से जन-जन में नवचेतना जगाने, उन्हें राष्ट्र के सांस्कृतिक, आध्यात्मिक अभ्युदय में योगदान देने के लिए सहमत करने के लिए शान्तिकुञ्ज से श्री जयराम मोटलानी एवं श्री गणेश पंवार की टोली जम्मू-कश्मीर के सीमावर्ती क्षेत्र सुन्दरबनी, अखनूर, जम्मू, धनौड़ी कटरा, तरोड़, साम्बा, उधमपुर, पठानकोट, जालन्धर, ऊना इत्यादि में पहुँची।

गायत्री शक्तिपीठ लोहारा से गोष्ठियों का शुभारंभ हुआ। इनके साथ जगह-जगह यज्ञ, संस्कार, बाल संस्कार शालाएँ एवं विद्यालयों में विद्यार्थियों को संदेश देने जैसे कार्यक्रम भी स्थानीय परिजनों द्वारा रखे गए। प्रत्येक कार्यक्रम/संगोष्ठी में औसतन 35 से 50 कार्यकर्त्ताओं, युवाओं, विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस सीमावर्ती क्षेत्र में परम पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व, विचारों और मिशन की गतिविधियों के प्रति अभूतपूर्व उत्साह जागा है। हर संगोष्ठी में समयदान-अंशदान के शानदार संकल्प उभरे हैं।

मंदिर में आयोजित गोष्ठी को संबोधित करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जयराम मोटलानी एवं श्री गणेश पंवार

इन संगोष्ठियों में कई प्रतिष्ठित गणमान्यों एवं अधिकारियों से भी भेंटवार्ता हुई। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने उन्हें गायत्री परिवार के मानवतावादी संदेश से अवगत कराया और सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों में सहयोग का निवेदन किया। इस क्रम में श्री रमेश कुमार, संभागीय आयुक्त, श्री सचिन कुमार वैश्य, जिला आयुक्त का प्रशंसनीय सहयोग मिला। वे शान्तिकुञ्ज आते रहे हैं।

एक कार्यक्रम जालंधर में भारत विकास परिषद् के राज्य समन्वयक श्री शिव कुमार सोनिक के सहयोग से सम्पन्न हुआ। जालंधर में ही पुलिस विभाग के ए.एस. आई. श्री सुखदेव अग्निहोत्री जी के घर भी विशिष्ट गणमान्यों की गोष्ठी हुई, जिसमें जन्मशताब्दी के महत्त्व एवं कार्यक्रमों की जानकारी दी गई।

बैतूल जिले की गोष्ठी में समयदान-अंशदान के संकल्प हुए

मुलताई, बैतूल। मध्य प्रदेश

परम वंदनीया माताजी एवं अखंड दीपक जन्मशताब्दी जनसंपर्क अभियान के क्रम में दिनांक 20 अगस्त को गायत्री शक्तिपीठ मुलताई में बैतूल जिले की गोष्ठी संपन्न हुई। जिले से 300 से अधिक सक्रिय प्राणवान कार्यकर्त्ता भाई/बहिनों की उपस्थिति रही। श्री प्रभाकांत तिवारी ने शान्तिकुञ्ज का प्रतिनिधित्व करते हुए जन्मशताब्दी वर्ष की विशिष्ट योजनाओं की जानकारी दी। इनमें विशिष्ट साधना एवं सत्संकल्प पाठ का व्यापक अभियान चलाने पर विशेष बल दिया गया। उपजोन समन्वयक श्री दिनेश देशमुख जी ने मण्डल निर्माण की चर्चा की तथा संकल्प पत्र भरवाए।

इस संगोष्ठी में जन्मशताब्दी वर्ष में सक्रियता, समयदान एवं अंशदान के प्रशंसनीय संकल्प उभरे। जिला समन्वयक श्री कैलाश वर्मा ने बैतूल जिले द्वारा 51 लाख रुपए के अनुदान की घोषणा की। जिला समन्वयक श्री कैलाश वर्मा ने बैतूल जिले द्वारा 51 लाख रुपए के अनुदान की घोषणा की। राजकुमार पालीवाल, बैतूल द्वारा 5 लाख, गायत्री प्रज्ञापीठ शोभापुर द्वारा 5 लाख तथा मुख्य ट्रस्टी श्री यादवराव निम्बालकर द्वारा गायत्री शक्तिपीठ मुलताई की ओर से 5 लाख रुपए के अंशदान का संकल्प लिया गया। नारायण देशमुख एवं रविशंकर पारखे ने सफल संचालन किया।

जन-जन में नवचेतना जगाती ज्योति कलश यात्रा

बूंदी। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ बूंदी द्वारा जिले में 1 अगस्त से 15 अगस्त 2025 तक राष्ट्र जागरण ज्योति कलश रथ यात्रा का भव्य आयोजन किया गया। इसके माध्यम से जन-जन तक युगप्रवर्तक ऋषि परम पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, परम वंदनीया माता जी तथा गायत्री माता के आशीर्वाद एवं विचार पहुँचाए गए। समाज में जाति-पाति का भेद मिटाकर सामाजिक समरसता एवं राष्ट्रजागरण के लिए सक्रिय योगदान देने का संदेश दिया गया। यात्रा में रामरतन नरवर, घनश्याम पाटीदार, लोकेश डांडिया शर्मा, रोडूलाल वर्मा, हरिशंकर वर्मा, चित्रलाल बिरला, पवन अग्रवाल, रमेश व राजेश ठेकेदार आदि का विशेष सहयोग मिला।

एक अगस्त को बडोदिया ग्राम पंचायत (डाकनी चौराहा, अशोक नगर) में पूरे बाजार में उत्साहपूर्ण वातावरण में यात्रा निकाली गई। स्वागत समारोह में सुनील सोनी, दुर्गाशंकर मंत्री, राधेश्याम गुप्ता (सरपंच बडोदिया) सहित अनेक गणमान्य उपस्थित रहे।

7 अगस्त को सिल्लोर, कालपुरिया, चित्तौडिया, नमाना, सुंदरपुरा, लोईचा, गुवार, केवडिया, गरडदा आदि गाँवों में ग्रामवासियों ने ज्योति कलश की आरती कर स्वागत किया। 12 अगस्त को रथ यात्रा ने बूंदी जिले का प्रवास पूर्ण कर नगर में प्रवेश किया। 12 से 15 अगस्त के बीच नेहरू युवा केन्द्र, छतरपुरा रोड, सगस जी की बावड़ी पर एवं गुरुनानक कॉलोनी में पंच कुंडीय हुआ। बालचंद पाड़ा स्थित खांडेराव गणेश मंदिर पर दीपयज्ञ सम्पन्न हुआ। 15 अगस्त को ज्योति कलश के सान्निध्य में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। उंदालिया की डूंगरी में पंच कुंडीय गायत्री यज्ञ सम्पन्न हुआ।

विचार क्रांति का प्रभावी माध्यम है प्रज्ञा अभियान

राजसमंद। राजस्थान

युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार के प्रतिनिधि नंदकुमार पाण्डेय और रामप्रताप यादव के नेतृत्व में जनसंपर्क गोष्ठी का आयोजन राजसमंद में किया गया। इसमें प्रतिनिधियों ने प्रज्ञा अभियान पत्रिका को सामाजिक परिवर्तन के लिए नितांत आवश्यक कार्य जनसंपर्क को बढ़ाने का सबसे प्रभावशाली माध्यम बताया। उन्होंने कहा कि यह पत्रिका विचार क्रांति, आत्मविकास और सामाजिक परिवर्तन का अत्यंत प्रभावी संदेश देती है। टोली के प्रेरणादायी विचारों से प्रभावित होकर स्थानीय परिजनों ने वहीं पर 100 प्रज्ञा अभियान पत्रिकाएँ मँगाने और वितरित करने का संकल्प लिया। इस पहल से राजसमंद जिले में मिशन की गतिविधियों को नई गति और जनजागरण की दिशा में बल मिलेगा।

पर्वों पर सत्प्रेरणाओं का संचार

स्वतंत्रता दिवस व जन्माष्टमी पर सांस्कृतिक चेतना जगाई

सुन्दरबनी, राजौरी। जम्मू-कश्मीर

गायत्री शक्तिपीठ एवं साधना केन्द्र, सुन्दरबनी लोहारा में स्वतंत्रता दिवस समारोह पूर्ण हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। ध्वजारोहण के पश्चात् देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए गए। वरिष्ठों ने संदेश देते हुए कहा, स्वतंत्रता दिवस केवल उत्सव नहीं बल्कि राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्यों और जिम्मेदारियों को स्मरण करने का अवसर है। इस अवसर पर संस्कार, सेवा एवं समर्पण के पथ पर चलते हुए भारत को सशक्त, समृद्ध और स्वावलम्बी बनाने का संकल्प लिया गया। इस आयोजन में नन्हें बच्चों सहित अनेक परिजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

जन्माष्टमी पर्व पर गौ माता का पूजन

गायत्री परिवार सुंदरबनी द्वारा माँ भगवती गौशाला राह, जम्मू कश्मीर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर गायत्री महायज्ञ एवं गौ माता पूजन का कार्यक्रम हुआ। विश्वशान्ति हेतु विशेष प्रार्थना की गई। बच्चों ने श्री कृष्ण के जीवन से जुड़ी प्रेरणाप्रद कविताएँ सुनाईं। परिजनों ने भगवान श्रीकृष्ण की शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारने का संकल्प लिया।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी समारोह में युग साहित्य का विस्तार

अणुशक्ति नगर, मुम्बई। महाराष्ट्र

'दिया' मुम्बई की अणुशक्ति नगर शाखा ने श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व अत्यंत श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साह के साथ मनाया। पर्व पूजन के पश्चात् अनेक भक्ति गीत गाये गए। जन्म शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों के उद्देश्य और महत्त्व पर चर्चा हुई।

इस अवसर पर युग चेतना विस्तार के लिए समर्पित युवाओं ने परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित पुस्तकों का स्टॉल लगाया। श्रद्धालुओं ने प्रज्ञा साहित्य में गहरी रुचि ली। डीसीएसईएम के निदेशक श्री के. महापात्रा जी ने सभी को युग साहित्य का महत्त्व बताते हुए कहा कि यह साहित्य युवा मन को आकार देने और आध्यात्मिक विकास यात्रा को आगे की ओर ले जाने में सक्षम है। जन्म शताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों के उद्देश्य और महत्त्व पर चर्चा हुई।

बाल संस्कारशालाओं में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक पूज्य गुरुदेव द्वारा लिखित साहित्य से विशेष रूप से प्रभावित हुए।

पर्यावरण संरक्षण-हरीतिमा संवर्धन के लिए मिला सम्मान

गरोठ, मंदसौर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार के जिला समन्वयक श्री मोहनलाल जोशी जी को नगर परिषद्, जनपद पंचायत गरोठ की ओर से स्वतंत्रता दिवस के मुख्य समारोह में प्रशस्ति पत्र एवं शील्ड देकर सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें गायत्री परिवार द्वारा व्यसन उन्मूलन, पर्यावरण संरक्षण एवं हरीतिमा संवर्धन के क्षेत्र में किए गए सत्प्रयासों के लिए प्रदान किया गया है। 79वें स्वतंत्रता दिवस समारोह में अनुविभागीय अधिकारी कार्यालय, उपखण्ड गरोठ की ओर से प्राप्त सम्मान सम्पूर्ण गायत्री परिवार के परिजनों के लिए अत्यंत हर्ष, गौरव एवं सम्मान का विषय है।

अन्नदान कर सेवा-सहयोग की परंपरा निभाई

विले पार्ले, मुम्बई। महाराष्ट्र

ऋतंभरा प्रज्ञा मंडल, विले पार्ले प्रतिमाह अमावस्या एवं पूर्णिमा पर भोजन वितरण कार्यक्रम आयोजित कर समाज सेवा की परंपरा को आगे बढ़ा रहा है। इसी क्रम में दिनांक 23 अगस्त 2025 को शनि अमावस्या एवं पिठोरी अमावस्या के उपलक्ष्य में विद्यानिधि मराठी माध्यम के विद्यालय में अन्न वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 124 छात्रों को अल्पाहार प्रदान किया गया। इस प्रकार का प्रयास प्रज्ञा मंडल की आध्यात्मिकता, सेवा और समाज कल्याण के प्रति गहरी निष्ठा को प्रकट करता है।

स्वतंत्रता दिवस एवं गायत्री विद्यापीठ का स्थापना दिवस

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

परम पूज्य गुरुदेव की आकांक्षाओं के अनुरूप बच्चों को शिक्षा और संस्कार देने लिए विख्यात् गायत्री विद्यापीठ, राजनांदगाँव में स्वतंत्रता दिवस समारोह के साथ-साथ विद्यालय का 43वाँ स्थापना दिवस भी हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर छात्रों के द्वारा अनेक देशभक्तिपूर्ण रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। मार्चपास्ट का आयोजन भी हुआ।

गायत्री शिक्षण समिति के वरिष्ठ संरक्षक श्री नंदकिशोर सुरजन समारोह के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने अपने उद्बोधन में छात्रों को अपने अंदर नेतृत्व क्षमता विकसित करने एवं शिक्षा के साथ विद्या को धारण करने का संदेश दिया।

कर्म करने वाले पुरुष को ही इस जगत में श्री, अर्थात् ऐश्वर्य मिलता है। - महाभारत

युग निर्माणी विचारधारा में ढल रही है नवयुग की तरुणाई

बाल पुरोहितों के मंत्रोच्चार से गूँजा भोपाल का ठेंगड़ी भवन

गायत्री परिवार के बच्चों ने किया श्रम साधना केंद्र का लोकार्पण

भोपाल। मध्य प्रदेश

भोपाल में श्रम साधना केंद्र के लोकार्पण के अवसर पर, भारतीय मजदूर संघ के कार्यालय ठेंगड़ी भवन में विशाल कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में गायत्री परिवार के संस्कारवान बाल पुरोहितों के द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के साथ गायत्री महायज्ञ संपन्न किया गया। इस अवसर पर भारत के 28 राज्यों के भारतीय मजदूर संघ एवं उनसे जुड़े हुए श्रमिक संगठनों के प्रमुख उपस्थित थे। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय मजदूर संघ के अखिल भारतीय अध्यक्ष मा. हिरण्मय पण्ड्या, अखिल भारतीय महामंत्री, मा. रवीन्द्र हिमते, अखिल भारतीय संगठन मंत्री मा. बी. सुरेन्द्रन के साथ साथ मध्य प्रदेश राज्य में श्रम साधना केन्द्र के सचिव श्री रामनाथ गणोशे, अध्यक्ष श्री कृष्ण प्रताप सिंह एवं प्रदेश महामंत्री श्री कुलदीप सिंह गुजर जी उपस्थित हुए।

इस आयोजन को आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान करने में गायत्री परिवार युवा मण्डल के युवाओं एवं बाल

बाल पुरोहितों के संग भारतीय मजदूर संघ के पदाधिकारी

संस्कारशालाओं में प्रशिक्षण प्राप्त किए बालकों की विशेष भूमिका रही। श्री राजू राम ने उपस्थित जन समुदाय को पूज्य गुरुदेव एवं गायत्री परिवार के आन्दोलनों से अवगत कराया। उल्लेखनीय है कि श्रम साधना केन्द्र श्रमिक वर्ग के कल्याण, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं नैतिक उत्थान पर मंथन कर महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

युग निर्माता शिक्षक प्रशिक्षण शिविर

फुलबनी, कंधमाल। ओडिशा

गायत्री परिवार की स्थानीय शाखा द्वारा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, फुलबनी के राजकीय बी.एड.कॉलेज में युग निर्माता शिक्षक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया। गायत्री परिवार ओडिशा के प्रांतीय योग समन्वयक योगाचार्य डॉ. विश्व रंजन रथ, श्री युक्ता पद्मचरण साहू सहित स्थानीय वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने विद्यार्थियों को युग की माँग के अनुरूप नैतिकता सम्पन्न, राष्ट्रनिष्ठ युवा पीढ़ी तैयार करने संबंधी मार्गदर्शन दिया। उन्होंने विद्यार्थियों से 'राष्ट्र प्रथम' की अवधारणा को साकार करते हुए व्यसन एवं भ्रष्टाचार मुक्त राष्ट्र के निर्माण का आह्वान किया। सामूहिक सूर्य नमस्कार के साथ गायत्री

मंत्र की साधना का अभ्यास कराया गया और युग निर्माण सत्संकल्प का वाचन किया गया।

नुक्कड़ नाटक के माध्यम से नन्हें बच्चों ने दी प्रेरणा

महिला सशक्तीकरण, मानसिक स्वास्थ्य, नशा मुक्ति एवं साइबर अपराध जैसे विषयों पर दिया प्रभावी संदेश

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार के आदर्शों से युक्त गायत्री विद्यापीठ राजनांदगाँव में नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इसमें विद्यार्थियों ने सामाजिक सरोकारों से जुड़े विषयों जैसे महिला सशक्तीकरण, मानसिक स्वास्थ्य, नशा मुक्ति एवं साइबर अपराध जैसे विषयों पर प्रभावी संवाद देते हुए अत्यंत सुन्दर अभिनय प्रस्तुत किया। विद्यार्थियों की इस प्रस्तुति ने न केवल दर्शकों को प्रभावित किया, बल्कि समाज में सकारात्मक संदेश भी प्रसारित किया।

इस अवसर पर शाला की प्राचार्या श्रीमती शैलजा नायर ने सभी प्रतिभागी विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि ऐसे सांस्कृतिक आयोजनों में सहभागिता विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में सहायक होती है और सामाजिक चेतना को परिष्कृत करती है।

पोला पर्व में दिखी छत्तीसगढ़ी संस्कृति की छटा

दिनांक 23 अगस्त को गायत्री विद्यापीठ में छत्तीसगढ़ की संस्कृति से जुड़ा पोला पर्व हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया, जिसमें छत्तीसगढ़ी संस्कृति की अदभुत छटा देखने को मिली। विद्यार्थियों ने छत्तीसगढ़ की लोककला एवं संस्कृति से जुड़ी नृत्य-संगीत की शानदार प्रस्तुति दी तथा पोला पर्व के अंतर्गत बनाए जाने वाले व्यंजनों का भी खूब आनंद उठाया।

विद्यार्थियों के उत्कर्ष के लिए चल रहा सतत अभियान

विद्यालयों में उद्बोधन तथा व्यक्तित्व विकास एवं व्यसनमुक्ति कार्यशालाएँ

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा विंग के आलमबाग के संयोजक श्री अरुण कुमार श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए प्रोत्साहित करने का अभियान निरंतर जारी है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत लखनऊ के लगभग प्रत्येक विद्यालय में पहुँचकर बच्चों और शिक्षकों को संबोधित किया जा रहा है। श्री अरुण कुमार जी के मार्गदर्शन में श्री आर.के. वर्मा, श्री के.एन. रस्तोगी एवं राकेश श्रीवास्तव ने माह अगस्त 2025 में छः विद्यालयों–मोहनलालगंज, लखनऊ के विश्वनाथ एकेडमी, धावापुर, विमला इंटरनेशनल स्कूल, कैथी तथा आदर्श ग्रामीण विद्या मंदिर इंटर कॉलेज, नींवा में और बिजनौर, लखनऊ के भोनवाल पब्लिक इंटर कॉलेज, आजाद विद्या मंदिर इंटर कॉलेज तथा राजकीय हाईस्कूल, खटोला में विद्यार्थियों को संबोधित किया।

गायत्री परिवार आलमबाग के प्रतिनिधियों ने इन विद्यालयों में बच्चों को भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में सम्मिलित होने वाले विद्यार्थियों के मानस पटल पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव एवं आन्तरिक परिवर्तन के बारे में बताया। छात्र जीवन में ही गायत्री उपासना तथा अच्छी आदतों को अपनाकर किस प्रकार अपना निर्माण कर सकते हैं, इसका विशेष उल्लेख किया।

राजकीय हाई स्कूल, बैंती, विकास खण्ड-सरोजनी नगर, लखनऊ में व्यक्तित्व विकास व व्यसन मुक्ति कार्यशाला आयोजित की गई। 200 से अधिक छात्र छात्राओं की उपस्थिति रही। मुख्य वक्ता श्री अरुण कुमार श्रीवास्तव ने प्राचीन भारतीय ग्रंथों, ऋषियों व महापुरुषों व भारतीय संस्कृति के वैज्ञानिक पक्ष का उल्लेख करते हुए बच्चों को भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में शामिल होने की प्रेरणा दी।

बेटियाँ चला रही हैं बाल संस्कारशाला

ध्यान साधना करते बाल संस्कारशाला के बच्चे

सुन्दरबनी, राजौरी। जम्मू-कश्मीर

सुन्दरबनी की क्रांतिकारी बेटियों ने अपने क्षेत्र में बाल संस्कारशाला का आयोजन किया एवं नवीन पीढ़ी को पूज्य गुरुदेव के विचारों से जोड़ा। बच्चों को नित्य गायत्री मंत्र जप करने, संस्कारपूर्ण जीवन पद्धति अपनाने, उत्तम स्वास्थ्य एवं आत्मरक्षा के लिए जागरूक एवं सक्रिय रहने जैसे कई विषयों पर मार्गदर्शन प्रदान किया गया। सुश्री सोनिया शर्मा ने बताया कि बेटियों के इस प्रयास की सबने सराहना की तथा आगे भी इस तरह के शिविरों का आयोजन करने का प्रोत्साहन दिया।

साकार हो रहा है बाल संस्कारशालाओं का संकल्प

अलवर। राजस्थान

शान्तिकुञ्ज में सन् 2016 के कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण शिविर में लिया गया संकल्प अब साकार होता दिखाई दे रहा है। गायत्री परिवार अलवर के युवा प्रकोष्ठ ने बाल संस्कारशालाओं के संचालन का संकल्प लिया था। प्रारंभ में पाँच संस्कारशालाएँ चलाने का निश्चय हुआ था, जो अब अलवर जिले में दर्जनों स्थानों पर सक्रिय हो चुकी हैं।

पहली संस्कारशाला 28 अगस्त 2016 को प्रताप नगर उत्तरी जोन में महाराणा प्रताप संस्कारशाला के नाम से प्रारंभ हुई, जिसका संचालन ममता गुप्ता और ज्योति गुप्ता ने किया। इसके बाद विभिन्न जोनों एवं मोहल्लों में अनेक संस्कारशालाएँ संचालित हुईं। आदर्श कॉलोनी में पंडित दीनदयाल संस्कारशाला, सोहम पब्लिक स्कूल एवं गायत्री पब्लिक स्कूल, अखैपुरा स्थित श्री वाल्मीकि मंदिर, गणेश गुवाड़ी का एकलव्य केन्द्र, खारबास मोहल्ला एवं जुबली बास की शालाएँ प्रमुख हैं।

महिला मंडल एवं युवा प्रकोष्ठ के सामंजस्य से संस्कारशालाओं का संचालन निरंतर गतिशील हो रहा है। कोरोना काल से ऑनलाइन बाल संस्कारशालाओं का भी शुभारंभ हुआ, जिसमें अलवर सहित जयपुर, झालावाड़, उदयपुर, जोधपुर से आचार्य बहिनें बच्चों को संस्कार दे रही हैं। इस अभियान को सफल बनाने में डॉ.

राजकुमार सतनाकर, ममता गुप्ता, नीलिमा पुरोहित सहित अनेक आचार्य बहनों का विशेष योगदान है।

गढ़ रहे हैं बाल मन

संस्कारशालाओं के माध्यम से बालकों को योग, स्वास्थ्य सूत्र, प्राचीन महापुरुषों की जीवनी, भारतीय संस्कृति एवं नशा मुक्ति जैसे विषयों पर प्रेरणादायी शिक्षा दी जा रही है। इससे बाल मन को नए साँचे में गढ़ा जा रहा है।

गायत्री परिवार ट्रस्ट करौली कुण्ड अलवर द्वारा ममता गुप्ता, मुकेश गुप्ता दंपत्ति को नए केन्द्र खोलने का दायित्व सौंपा गया है। उद्देश्य है–हर गाँव, हर बस्ती तक प्रज्ञा अभियान का संदेश पहुँचाकर संस्कारवान पीढ़ी का निर्माण।

आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज में वाङ्मय स्थापना

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर, लखनऊ के विचार क्रान्ति ज्ञान यज्ञ अभियान के अन्तर्गत अर्णव आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एण्ड सी.एन.एस. हॉस्पिटल, सतरिख, बाराबंकी, उ.प्र. के पुस्तकालय में पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा रचित सम्पूर्ण 79 खण्डों की स्थापना की गई। यह साहित्य गायत्री परिवार की सक्रिय कार्यकर्त्री श्रीमती सरोज श्रीवास्तव ने भेंट किया। समारोह में हॉस्पिटल के चिकित्सक एवं छात्र-छात्राएँ भी उपस्थित हुए।

वाङ्मय स्थापना अभियान के मुख्य संयोजक श्री उमानंद शर्मा ने इस अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव की विचार संजीवनी का महत्त्व बताया। उन्होंने इस अभियान

गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर, लखनऊ द्वारा अब तक 447 सार्वजनिक पुस्तकालयों में परम पूज्य गुरुदेव के समग्र वाङ्मय की स्थापना की गई है।

परम पूज्य गुरुदेव के वाङ्मय के साथ
अर्णव आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज के विद्यार्थी

से जुड़े सभी दानदाताओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ज्ञानदान पूर्वजों के लिये सच्ची श्रद्धांजलि है।

आर.जी.एस. कॉलेज ऑफ फार्मेसी, इटौंजा, लखनऊ में 447वें वाङ्मय साहित्य सेट की स्थापना हुई। यह साहित्य सेट गायत्री परिवार की सक्रिय कार्यकर्त्री श्रीमती सीमा निरंजन एवं श्री अनिल कुमार निरंजन ने अपने पुत्र श्री हर्षवर्धन निरंजन एवं पुत्री सुश्री अदिति निरंजन के उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना के साथ भेंट किया।

प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ का लोकप्रिय कार्यक्रम-बाल संस्कारशाला

जहानाबाद। बिहार : प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ जहानाबाद के मार्गदर्शन में निजामुद्दीन, गायत्री शक्तिपीठ, पाईविगहा इत्यादि कई स्थानों पर बाल संस्कारशालाएँ चलाई जा रही हैं। ये बाल संस्कार शालाएँ बच्चों द्वारा खूब पसंद की जा रही हैं। बड़ी संख्या में बच्चे इनमें भाग ले रहे हैं। बच्चों के बदलते विचार और संस्कारों को देखकर उनके अभिभावक भी बड़े प्रसन्न हैं। इनमें भाग लेने वाले बच्चों को गायत्री मंत्र का महत्त्व, सुसंस्कारिता, स्वच्छता, शालीनता इत्यादि का पाठ पढ़ाया जा रहा है।

धन से सद्गुण उत्पन्न नहीं होते, वरन सद्गुणों से ही धन एवं अन्यान्य इच्छित वस्तुएँ प्राप्त होती हैं।

शान्तिकुञ्ज में आयोजित हुआ निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर

दो दिनों में कुल 613 लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण हुआ

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जन्मशताब्दी चिकित्सालय शान्तिकुञ्ज में 28 एवं 29 अगस्त को निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर आयोजित हुआ। चिकित्सालय प्रबंधन के अनुसार देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं मेदांता हॉस्पिटल गुरुग्राम के संयुक्त तत्त्वावधान में सम्पन्न इस शिविर के पहले दिन 290 और दूसरे दिन 323 मरीजों का परीक्षण किया गया। डॉ. हिमांशु पुना, डॉ. रमेश कुमार झा, डॉ. गोपीवल्लभ पाटीदार सहित कई विशेषज्ञ डॉक्टरों ने अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। शान्तिकुञ्ज एवं निकटवर्ती क्षेत्रों से आये परिजनों ने इस शिविर का लाभ लिया।

दो दिवसीय शिविर में लाभार्थियों के रक्तचाप, मधुमेह, ईसीजी, पीएफटी, छाती की जांच एवं एक्स-रे जैसी विविध जाँच सेवाएँ निःशुल्क प्रदान की गईं।

शिविर का शुभारंभ करते शान्तिकुञ्ज व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य शताब्दी चिकित्सालय प्रभारी डॉ. मंजू चोपदार तथा मेदांता हॉस्पिटल से आए अतिथि चिकित्सक

आवश्यकतानुसार मरीजों के ब्लड टेस्ट, ईसीजी व अन्य परीक्षण भी कराये गये तथा निःशुल्क दवाइयाँ भी दी गयीं।

100 विद्यार्थियों को स्कूल बैग और अन्य सामग्री दी

शान्तिकुञ्ज द्वारा परम वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा जी के जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में चलाए जा रहे माँ भगवती देवी जन्मशताब्दी अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत हरिद्वार जनपद के विभिन्न प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को स्कूल बैग किट बाँटे जा रहे है। इसी कार्यक्रम के अंतर्गत 27 अगस्त को सप्तऋषि आश्रम स्थित संस्कृत महाविद्यालय एवं गीता कुटीर, हरिपुर के लगभग सौ बच्चों को स्कूल बैग किट प्रदान किये गये। इस किट में विद्यार्थियों को स्कूल बैग, पानी की बोतल आदि सामग्री प्रदान की गई।

इससे पूर्व शान्तिकुञ्ज ने हरिद्वार जनपद के खानपुर क्षेत्र के सभी शासकीय प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों के 1000 से अधिक विद्यार्थियों को स्कूल बैग किट प्रदान किए हैं।

श्रीमती पण्ड्या जी से स्कूल बैग किट प्राप्त करते बच्चे

गायत्री विद्यापीठ की व्यवस्था मंडल प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या, शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि ने बच्चों को यह सामग्री प्रदान की। श्रीमती पण्ड्या ने इस अवसर पर कहा कि इस योजना का उद्देश्य बच्चों के मन में शिक्षा के प्रति उत्साह और आत्मबल का संचार करना है। श्री योगेन्द्र गिरि ने कहा कि यह सेवा योजना समाज के उन वर्गों के बच्चों तक पहुँच रही है, जिनकी संसाधनों के अभाव में शिक्षा के प्रति रुचि कम हो रही हैं। इस अवसर पर बच्चों के अभिभावक, शिक्षक आदि उपस्थित रहे।

एसबीआई ने शान्तिकुञ्ज को दो ई-रिक्शा भेंट किये

भारतीय स्टेट बैंक ने अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों (सीएसआर) के अंतर्गत शान्तिकुञ्ज को दो ई-रिक्शा भेंट किए। एसबीआई के डीजीएम श्री दीपेश राज ने 21 अगस्त को शान्तिकुञ्ज परिसर में आयोजित एक गरिमामय समारोह के साथ यह ई-रिक्शा शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ प्रतिनिधि आदरणीया शेफाली जीजी एवं शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी को भेंट किये। दोनों ने इस भेंट को विनम्रतापूर्वक स्वीकार करते हुए भारतीय स्टेट बैंक को साधुवाद दिया। इस अवसर पर डीजीएम श्री दीपेश राज के साथ रीजनल मैनेजर श्री राजेश कुमार शाह एवं चीफ मैनेजर श्री संजय कुमार आदि उपस्थित रहे।

श्री दीपेश राज ने कहा कि शान्तिकुञ्ज का सामाजिक जागरूकता बढ़ाने, पर्यावरण संरक्षण जैसे कार्यों में बहुत बड़ा योगदान है। ऐसी संस्था को उपयोगी संसाधन उपलब्ध कराने में भारतीय स्टेट बैंक को गौरव की अनुभूति होती है।

ई-रिक्शा की चाभी भेंट करते एसबीआई के डीजीएम

देसंविवि में आयोजित हुआ संस्कृत संभाषण शिविर

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में संस्कृत सप्ताह के अंतर्गत संस्कृत एवं वैदिक अध्ययन विभाग द्वारा दस दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का आयोजन किया गया। इसमें विश्वविद्यालय के संस्कृत एवं वैदिक अध्ययन सहित विभिन्न संकायों से लगभग पचास छात्र-छात्राओं तथा शिक्षक-शिक्षिकाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। शिविर से प्रतिभागियों में संस्कृत भाषा और प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति रुचि जगी।

माननीय प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि हमारे अधिकतर आर्ष ग्रंथ संस्कृत में ही हैं। संस्कृत वेदवाणी है, जो हमारी संस्कृति की आत्मा का स्पर्श कराती है।

संस्कृत संभाषण शिविर के समन्वयक तथा संस्कृत एवं वैदिक अध्ययन विभागाध्यक्ष डॉ. गायत्री किशोर त्रिवेदी ने बताया कि शिविर में विद्यार्थियों को भाषा के साथ वेदमंत्रों का उच्चारण, व्याकरण की मूल बातों, दैनिक जीवन में संस्कृत के प्रयोग तथा भारतीय संस्कृति के मूल स्तंभों का परिचय कराया गया।

'नालंदा विश्वविद्यालय के लिए एजेंडा और दृष्टिकोण' पर सम्मेलन

देव संस्कृति विश्वविद्यालय की भागीदारी

विशिष्ट सम्मान

विशिष्ट विद्वत्सभा में डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने वैज्ञानिक अध्यात्मवाद, मूल्य आधारित शिक्षा और सांस्कृतिक ज्ञान को समाहित करने की आवश्यकता पर रखे विचार

देसविवि के प्रति कुलपति जी सम्मेलन में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए

दिल्ली : नालंदा विश्वविद्यालय की यात्रा के अगले चरण की रूपरेखा पर विचार-विमर्श एवं निर्धारण हेतु दिल्ली में एक अत्यंत उच्च स्तरीय गोलमेज चर्चा आयोजित हुई। 'नालंदा विश्वविद्यालय के लिए एजेंडा और दृष्टिकोण' विषय पर आयोजित इस चर्चा में प्रख्यात विचारकों और शिक्षाविदों ने भाग लिया। विचार-विमर्श का विषय ज्ञान के आदान-प्रदान, अंतःविषयक शिक्षा और सांस्कृतिक संवाद के केंद्र के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय की पहचान को मजबूत करना, आधुनिक शिक्षा की आवश्यकताओं के साथ तालमेल बैठाते हुए प्राचीन नालंदा परंपरा की भावना को पुनर्जीवित करना था।

शिक्षा और संस्कृति के वैश्विक स्तर पर उत्थान के लिए अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या की उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशिष्ट गरिमा प्रदान की। उन्होंने आधुनिक विश्वविद्यालयों के रोडमैप में वैज्ञानिक अध्यात्मवाद, मूल्य-आधारित शिक्षा और सांस्कृतिक ज्ञान को समाहित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि शिक्षा न केवल ज्ञान प्रदान करे, बल्कि विद्यार्थियों के चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण कर उन्हें वैश्विक उत्तरदायित्वों के प्रति जागरूक एवं संवेदनशील भी बनाए।

चर्चा में शामिल हुए प्रतिष्ठित गणमान्य

गोलमेज चर्चा में जिन प्रतिष्ठित गणमान्यों ने भाग लिया, उनमें विशिष्ट उल्लेखनीय हैं श्री सचिन चतुर्वेदी, महानिदेशक, विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली (आरआईएस), डॉ. विजय चौथाईवाले, प्रभारी, विदेश विभाग, नई दिल्ली, डॉ. मीनाक्षी जैन, संसद सदस्य (राज्यसभा), डॉ. हेमांग जानी, वर्ल्ड बैंक, वाशिंगटन डीसी, डॉ. ए.एस. अजय चौधरी, अध्यक्ष, नेशनल क्वांटम मिशन ऑफ इंडिया और संस्थापक, एचसीएल, श्री भरत लाल, महासचिव एवं सीईओ, एनएचआरसी, डॉ. शर्मिला शेखर मांडे, विशिष्ट वैज्ञानिक अध्यक्ष, आयुष मंत्रालय, राजदूत प्रीति सरन, पूर्व सचिव, विदेश मंत्रालय, डॉ. रमेश सी. गौड़, डीन और प्रमुख, आईजीएनसीए, संस्कृति मंत्रालय, डॉ. शमिका रवि, मेंबर, नीति आयोग, डॉ. (श्रीमती) एन. कलैचेल्वी, महानिदेशक, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर)।

माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिड़ला जी एवं माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी से भेंट

नई दिल्ली।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी अपने दिल्ली प्रवास में माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिड़ला जी तथा भारत सरकार के माननीय रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह जी से मिलने पहुँचे। यह भेंट अगले जन्मशताब्दी वर्ष-2026 में गायत्री परिवार द्वारा आयोजित किये जा रहे विशाल महोत्सवों से माननीयों को अवगत कराने के संदर्भ में हुई।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उन्हें बताया कि यह महोत्सव केवल एक संगठन का आयोजन नहीं, बल्कि भारत की सनातन संस्कृति, सामाजिक एकता एवं आध्यात्मिक चेतना के पुनर्जागरण का विराट पर्व होगा, जिसमें देश-विदेश से करोड़ों श्रद्धालु एवं विद्वान सहभागिता करेंगे।

माननीय लोकसभा अध्यक्ष जी से संसद भवन में हुई भेंट के समय उनके साथ समाज के सर्वांगीण उत्थान हेतु भावी योजनाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा युवाओं के नैतिक-सांस्कृतिक जागरण पर केंद्रित अभियानों पर भी विचार-विमर्श हुआ। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने उन्हें 16 सितम्बर को देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार में आयोजित होने वाले कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) विषयक विशेष कार्यक्रम हेतु आमंत्रित किया।

माननीय रक्षामंत्री जी के संग समाज एवं राष्ट्र के सर्वांगीण उत्थान हेतु भावी कार्यक्रमों तथा संभावित योजनाओं पर चर्चा हुई।

माननीय श्री ओम बिड़ला जी एवं माननीय श्री राजनाथ सिंह जी को युग निर्माण सत्संकल्प का चित्र भेंट करते देसंविवि के प्रति कुलपति आद. डॉ. चिन्मय जी

देसंविवि में ऋषि पंचमी पर वृक्षारोपण एवं पर्यावरण संवाद

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में ऋषि पंचमी का पावन पर्व विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण की भावना का पोषण करने के भाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे पर्यावरण संरक्षण के वैश्विक अभियान के अंतर्गत वृक्षारोपण एवं 'पर्यावरण संवाद' के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

वृक्षारोपण का कार्यक्रम माननीय प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं गायत्री विद्यापीठ की व्यवस्था मण्डल प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों ने आम की विभिन्न प्रजातियों सहित अनेक फलदार पौधे रोपे और मित्रवत् भाव से उनकी देखभाल करने का संकल्प लिया। माननीय प्रति कुलपति जी ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि इस तरह के कार्यक्रम लोगों में प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी और संवेदनशीलता का भाव बढ़ाते हैं।

'पर्यावरण संवाद' के अंतर्गत विद्यार्थियों ने वृक्षारोपण से जुड़े अपने अनुभवों को साझा किया। वे वृक्षों को अपना मित्र बनाने की अवधारणा से अत्यंत प्रेरित थे।

राष्ट्रों की सम्पति तो सद्गुणी मनुष्य ही हैं-रेशम, कपास या स्वर्ण नहीं।

जन्मशताब्दी वर्ष-2026 मानवता के उत्थान के सौभाग्य और संकल्प का समय है

भारत मण्डपम, दिल्ली में आयोजित ऐतिहासिक समारोह में मानवता और राष्ट्र के लिए सक्रियता का आह्वान

''हम अगले वर्ष एक ऐसी दैवीय घटना की शताब्दी मनाने जा रहे हैं, जो सारी मानवता के सौभाग्य का कारण बनी। सन् 1926 में वसंत पंचमी के दिन परम पूज्य गुरुदेव को आत्मबोध कराने के लिए दैवीय चेतना का अवतरण, उस घटना की साक्षी के प्रतीक अखण्ड दीप का प्रज्वलन तथा उसी वर्ष शक्तिस्वरूपा परम वंदनीया माताजी का अवतरण ऐसी घटनाएँ थीं, जिनके बाद 24 नवम्बर सन् 1926 के दिन योगीराज महर्षि अरविंद ने लाइफ डिवाइन में लिखा था कि इस धरती पर एक दिव्य ज्योति का अवतरण हो चुका है।''

राष्ट्र चेतना के जागरण के लिए सौंपी गई विरासत को पूरे विश्व में बड़ी प्रखरता और कुशलता के साथ पहुँचा रहे अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा पथ प्रदर्शक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने देश के दिल दिल्ली के हृदयस्थल भारत मण्डपम में आयोजित युग सृजेताओं के एक विशाल सम्मेलन को संबोधित करते हुए ये विचार व्यक्त किये। 24 अगस्त को यह सम्मेलन शान्तिकुञ्ज द्वारा जन्मशताब्दी-2026 के उपलक्ष्य में 'राष्ट्र के जागरण का समय आ गया' विषय से आयोजित किया गया था।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि युग चेतना के अवतरण की शताब्दी केवल एक लौकिक घटना नहीं है, बल्कि एक ऐसी दैवीय योजना है, जो हम सबके लिए सौभाग्य की पुकार और संकल्प की गुहार लेकर आई है। आने वाले 50 वर्षों तक हमें भारत के उत्कर्ष के लिए समर्पित रहना है। पूज्य गुरुदेव ने लिखा है कि भारतभूमि भगवान का निवास स्थान है। भारत पूरी सृष्टि के सौभाग्य की भूमि है। जब भारत जागेगा, तभी विश्व जागेगा।

इस आयोजन में एनसीआर दिल्ली और आसपास के राज्यों से आए हजारों युवा, प्रबुद्ध नागरिक, शिक्षाविद एवं समाजसेवी शामिल हुए। उन्होंने शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि के विचारों को गहराई से आत्मसात करते हुए यह संकल्प लिया कि वे युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी एवं परम वंदनीया माताजी की प्रेरणा एवं संकल्पों के अनुरूप नवयुग के निर्माण में सहभागी बनेंगे।

माननीय केन्द्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह जी को सम्मानित करते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी साथ में केन्द्रीय मंत्री श्री उईके जी, श्री शेखावत जी तथा स्वामी ब्रह्मबिहारी जी

दो प्रतिज्ञाएँ : नशा और भेदभाव को छोड़ो

भारत मण्डपम में आयोजित इस ऐतिहासिक सम्मेलन में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने राष्ट्र की प्रगति में बड़ा अवरोध बन रही दो ज्वलंत समस्याओं -एक नशा और दूसरा जातिवाद का दर्द अनुभव करने और उनके समूल नाश के लिए प्रयत्नशील होने की प्रेरणा दी और संकल्प दिलाए।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि भारत में 16.1 करोड़ लोग किसी न किसी तरह के नशे के शिकार हैं। भारत में शराब पीकर गाड़ी चलाने के कारण प्रतिवर्ष लगभग 6.5 लाख लोग मर रहे हैं। हम गायत्री परिवार के 16 करोड़ लोग यदि भटके हुए एक-एक व्यक्ति को सत्पथ की ओर वापस लेकर आते हैं, तो हम 16 करोड़ योग्य नागरिकों को इस देश को सौंप पाएँगे।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि गुरुदेव ने हमें जाति-वंश सब एक समान, नर और नारी एक समान, मानव मात्र एक समान का चिंतन दिया है। हमारी जाति एक है, मानव जाति, हमारा उद्देश्य एक है मानव धर्म, हम लोगों की माँ एक है, भारत माता। जब भारत माता भेद नहीं कर रही है तो हम भेद करने वाले कौन होते हैं? यदि देश को उठाना है, तो पहले एक-दूसरे के विग्रह को, भेदभाव को मिटाना होगा। जब तक जुड़ेंगे नहीं, तब तक उठेंगे नहीं।

अध्यात्म और राजतंत्र का संगम

स्वामी ब्रह्मबिहारी जी, प्रमुख-अंतरराष्ट्रीय सम्बन्ध (बीएपीएस) एवं स्वामी अक्षरवत्सल दास जी (अध्यक्ष, अक्षरधाम, नई दिल्ली) ने सारस्वत अतिथि के रूप में उपस्थित होकर समारोह की गरिमा बढ़ाई। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री तथा मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान, केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री माननीय श्री गजेंद्र सिंह शेखावत तथा जनजातीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री माननीय श्री दुर्गादास उइके कार्यक्रम के विशिष्ट गणमान्य अतिथि थे। उन्होंने बड़ी विनम्रता के साथ स्वयं को परम पूज्य गुरुदेव का एक सामान्य शिष्य एवं कार्यकर्त्ता बताते हुए गुरुसत्ता से मिले अनुदान एवं प्रेरणाओं के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने युग के नवनिर्माण, मानवता के उत्थान तथा जन्मशताब्दी वर्ष के संदर्भ में अपने विचार साझा करते हुए अत्यंत उपयोगी मार्गदर्शन दिया।

हम परिवर्तन के लिए इकट्ठे हुए हैं

यह सिर्फ प्रचार का आयोजन नहीं है, यह परिवर्तन का आयोजन है। हम अपने देश के परिवर्तन के लिए इकट्ठे हुए हैं। हम अनगिनत लोगों के जीवन को बदलना चाहते हैं, वास्तव में यही सद्विचार है और यही इस सभा को सार्थक बनाता है। इस दुनिया में ऐसा कोई काम नहीं, जो आप नहीं कर पाएँ। गुरु की कृपा होगी तो आपका खुद का जीवन भी बदलेगा और आप पूरे देश को बदल सकते हैं। याद रखें आप निःस्वार्थ हैं, तो आप असीम हैं।

- स्वामी ब्रह्मविहारी जी, प्रमुख-अंतरराष्ट्रीय सम्बन्ध (स्वामीनारायण संस्थान)

भारत विश्व के कल्याण का संदेश देता है

परम पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से मैं आज यह कहने का साहस कर रहा हूँ कि भौतिकता की अग्नि में दग्ध विश्व मानवता को शाश्वत शांति के पथ का दिग्दर्शन अगर कोई करायेगा, तो वह भारत करायेगा, हमारी संस्कृति करायेगी और यह हो कर रहेगा। भारत विश्व के कल्याण का संदेश देता है। हजारों साल पहले भी दुनिया को दिशा देने वाला भारत था। आज भी वह काम भारत ही करेगा। हम सचमुच में सौभाग्यशाली हैं कि राष्ट्र के जागरण का जो महायज्ञ चल रहा है, उसमें हम लोग अपनी आहुति दे पा रहे हैं।

हम स्वदेशी का संकल्प लें : काम वही कर पाता है, जिसमें दम हो, ताकत हो। अगर हम कमजोर रह जाएँगे तो काम नहीं कर पाएँगे। हमारी अर्थव्यवस्था मजबूत बने, इसके लिए एक बात जरूरी है कि हम स्वदेशी का संकल्प लें।

- माननीय श्री शिवराज सिंह जी, केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री

युग प्रवर्तक ऋषि थे परम पूज्य गुरुदेव

जब-जब हमारे सामने चुनौतियाँ आईं, तब-तब कोई न कोई तपस्वी इस भारत की भूमि पर उदित हुआ, प्रकट हुआ और उसने भारत की चेतना को सम्बल प्रदान करने का काम किया। उनमें से एक परम पूज्य गुरुदेव थे। एक ऐसे अद्भुत मनीषी, युगद्रष्टा, जिनके दूरदर्शी नेतृत्व ने, उनके व्यक्तित्व और उनके कर्तृत्व ने इस देश को ऐसे समय में दिशा प्रदान की, जब देश को उसकी सर्वाधिक आवश्यकता थी।

- माननीय श्री गजेंद्र सिंह शेखावत, केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री

नवयुग का आधार-युग निर्माण सत्संकल्प

महाकाल का युग प्रत्यावर्तन का क्रम चल रहा है। माँ आद्यकाली और महादेव प्रचंड तांडव नृत्य करते हुए प्रतीत हो रहे हैं। विश्व के नूतन सृजन की दिशा में पूज्य गुरुदेव एक सृजेता की भूमिका निभा रहे हैं। अनीति, अनाचार, पापाचार सब का शमन होगा और भारत फिर से विश्व गुरु के सिंहासन पर प्रतिष्ठित होगा।

हम सभी सौभाग्यशाली हैं कि पूज्य गुरुदेव ने अपनी दिव्य दृष्टि से आने वाले कल की संरचना का आधार नवयुग के संविधान के रूप में 18 सूत्रों के रूप में हमें सौंपा है। हमें समाज, देश और दुनिया को इन्हीं सूत्रों को अपनाने के लिए प्रेरित करना है। **- माननीय श्री दुर्गादास उईके, केन्द्रीय मंत्री**

उत्तरकाशी में आपदाग्रस्त परिवारों की सहायता

शान्तिकुञ्ज से दूसरी खेप में 200 परिवारों के लिए और तीसरी खेप में 150 परिवारों के लिए राहत सामग्री भेजी गई

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज ने 17 अगस्त को उत्तरकाशी जनपद के धराली एवं थराली क्षेत्र में आई प्राकृतिक आपदा से प्रभावित परिवारों की सहायता के लिए राहत सामग्री की दूसरी खेप भेजी। व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी ने बताया कि दूसरी खेप में लगभग दो सौ परिवारों के लिए राहत सामग्री शान्तिकुञ्ज से भेजी गई। उन सभी परिवारों के लिए आटा, चावल, दालें, मसाले, चीनी, बर्तन सेट, वस्त्र, गरम कपड़े आदि आवश्यक सामग्रियाँ भेजी गईं। श्री मंगल सिंह गढ़वाल के नेतृत्व में 9 सदस्यीय टीम राहत सामग्री लेकर पीड़ित परिवारों तक पहुँची थी।

आपदा प्रबंधन दल को धराली रवाना करने से पूर्व शान्तिकुञ्ज प्रमुख श्रद्धेया शैल जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी ने आवश्यक मार्गदर्शन दिया। उन्होंने कहा कि पीड़ित मानवता की सेवा सबसे बड़ा धर्म है। गायत्री परिवार पीड़ित मानवता की सेवा में सदा अग्रणी रहा है। हमें आपदा प्रभावितों को जीवनावश्यक वस्तुएँ प्रदान करने के साथ उनका मनोबल भी बढ़ाना है।

अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि हम प्रशासन के सतत संपर्क में हैं। प्रशासन के आग्रह पर ही शान्तिकुञ्ज से राहत सामग्री की यह दूसरी खेप रवाना की गई है।

राहत सामग्री की तीसरी खेप को रवाना करते शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक महोदय

शान्तिकुञ्ज ने थराली में आपदा से प्रभावित परिवारों की सहायता के लिए 29 अगस्त को तीसरी खेप रवाना की। शान्तिकुञ्ज आपदा प्रबंधन दल के श्री मंगल सिंह गढ़वाल एवं श्री अरुण तोमर के नेतृत्व में कुल 9 सदस्यीय दल राहत सामग्री लेकर थराली के लिए रवाना हुआ। दल के साथ 150 परिवारों के लिए राहत सामग्री किट भेजे गए। प्रत्येक किट में चावल-10 किग्रा, आटा-10 किग्रा, दाल-3 किग्रा, चीनी-3 किग्रा, चायपत्ती, पोहा-2 किग्रा, मसाले, सूखा नाश्ता-3 पैकेट, दूध पाउडर, एक कंबल तथा थाली, गिलास आदि बर्तनों का एक पूरा सेट शामिल है।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.org
समाचार प्रेषण : news@awgp.org

Publication date: 12.09.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26